संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १३० ● : अंक ०८ ● २० फरवरी २०२५ (गुरुवार) फाल्गुन कृष्णपक्ष सप्तमी सम्वत् २०८१ ● दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२५

महर्षि दयानन्द सरस्वती: विज्ञान और अध्यात्म

-परीक्षित मंडल 'प्रेमी'

अध्यात्म प्रवण आर्यावर्त प्राचीन काल से संबुद्ध साधक संतों. ऋषि-मुनियों, तपाचारियों, योगियों दार्शनिकों और वैज्ञानिकों का देश रहा है। हमारी भव्य भास्वर संस्कृति की दिव्य ज्योतिः संधारक किरणों की भव्य परंपरा में अनेक महर्षियों, वेद-ऋषियों का यहाँ प्रादुर्भाव हुआ तथा अनेक ब्रह्मर्षियों की सृष्टि हुई। सत्य-ऋत धर्मों के नियामक यहाँ हुए, जिन्होंने अपनी चिदानंदमयी अलौकिक शक्ति से अखिल विश्व को प्रेरित प्रभावित किया और सत्य, धर्म, दर्शन और अध्यात्म की मानवीय व्याख्या करके निखिल विश्व को नई सीखें दी, शिष्ट-सभ्य गहरी अन्तर्दष्टि प्रदान की, जो अमृत से संदीप्त और भूयसीज्योति से प्रतिबिंबित है। परावैज्ञानिक प्रदीप्तमान दर्शन-चिंतन और अमृत ज्योति के प्राणतत्त्व से प्रोद्भासित दाक्षिण्यमय आचरण हमारी परंपरा के ये दो सप्राण-सहज अवयव है, जिनका विकास युग-युग से होता आया है। हिमालय के पवित्र प्रांगण में अरुणाभ किरणों का प्रथम उपहार देकर हमारा अभिनन्दन करने बाली उषा ने सर्वप्रथम हमें ही हीरकहार पहनाया था। हमने तो अखिल विश्व को अपनी मधुमयसाम संगीत की संचेतना और समृद्ध पराज्ञान-विज्ञान की परंपरा का यथोचित दान दिया है. इसका साक्षी अतीत का स्वर्णिम इतिहास है। आज भी अनुसंधान के बढ़ते हुए कदम इसी विराट सत्य को विराट फलक पर उद्घाटित करते हैं। सत्य-ऋत उद्दभासित मनस्वी महाप्राज्ञों की इसी सिद्ध पौर्विक परंपरा में वेदों के प्रमाण पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती परमहंस जी का नाम सहज ही लिया जा सकता है। इनका अवतरण गुजरात प्रांत के 'टंकारा' ग्राम में १२ फरवरी १८२४ में हुआ था। इनका जन्म नाम मूलशंकर तथा पिता का करसन जी तिवारी था। इनको पाँच वर्ष की अवस्था से पहले ही देवनागरी अक्षर पढ़ाना और उसके साथ संध्या, गायत्री, वेदपाठ कण्ठस्थ कराना कर्मठ पिताश्री ने प्रारंभ करवा दिया था। ये जन्मतः संस्कारवश आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक होने से इस क्षेत्र में प्रवृत्त हो गये थे। दिव्य संस्कारवश इन्होंने धर्म, दर्शन और अध्यात्म साधना को अपना जीवन

सर्वतोभावेन समर्पित कर दिया था।

भारतीय ऋषि-मुनियों की परंपरा की अद्यतन कड़ी ऋषि-भूमि भारतवर्ष के लब्धप्रतिष्ठ कान्तद्रष्टा महाप्राज्ञ मनीषी, आर्य समाज के प्रवर्तक और मंत्रद्रष्टा ऋषि दयानंद के सचमुच हम बड़े आभारी हैं कि इन्होंने अपनी असाधारण सारस्वत सघन साधना तथा कारयित्री प्रतिभा प्रभा से अपने विपुल साहित्य में वैज्ञानिक चिंतन-दर्शन के दिव्यालोक में विज्ञान को विशाल फलक पर उपस्थापित किया और ये देश-विदेश के करोड़ों धर्म-अध्यात्मानुरागी साधकों के हृदय सम्राट बन गये। ये विज्ञानोन्मुख सप्राण साधना के समर्थ विज्ञानर्षि थे। तब प्रश्न है कि विज्ञान क्या है? इस प्रश्न का उत्तर इस पर निर्भर करता है कि हम विज्ञान से क्या समझते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि नियम की श्रृंखला में गूंथे हुए विशेष ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। यह किसी वस्तु या घटना के कार्य-कारण संबंध की वर्णनीय सूक्ष्म विवृत्ति है, जिसे विज्ञानानुरागी व्यक्ति अपनी कारयित्री प्रतिमा प्रभा तथा सर्वतोभद्र विकास के साथ-साथ सुदृढ़ करता चलता है। यह किसी अधकचरे अध्ययन का अकस्मात् वमन नहीं है. छद्म आवरण की सूचनाओं का क्रमहीन संकलन नहीं है तथा कथित तथ्यों की भ्रांतपूर्ण प्रलंब सूची नहीं है। किसी विस्मयकारक विचारों के विकट विवर्ण का मानचित्र नहीं है। किसी बटुतोषी विचारों के लेखन की अवितथ प्रतिलिपि नहीं है और न सुरंग सुहावनी किसी बासी शैली की पॉलिश या भदेस भौडी नकल ही है, क्योंकि नियम और सम्यक् सत्य श्रृंखला विज्ञान का विधान है।

पाश्चात्य विद्वान प्रोफेसर गार्नर ने विज्ञान की परिभाषा इन शब्दों में दी है- "विज्ञान उस एकीकृत ज्ञान भंडार को कहते हैं, जिसकी प्राप्ति विधिवत् पर्यवेक्षण, अनुमव और अध्ययन द्वारा हुई हो और जिसके तथ्यों का उनमें परस्पर उचित संबंध स्थापित करके क्रमबद्ध वर्गीकरण किया गया हो।" पुनः चेम्बर्स डिक्शनरी में विज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा गया है- "विज्ञान वह ज्ञान है, जो पर्यवेक्षण और प्रयोग पर आधारित हो, भली-भाँति परीक्षित तथा क्रमबद्ध हो और सामान्य सिद्धांतों पर समाहित हो। इस अर्थ में विज्ञान किसी पदार्थ या घटना के कार्य-कारण संबंध की संगठित, सुश्रृंखलित और बारीक व्याख्या है। जिसे ऋतंभरा विवेक विभासित व्यक्ति बुद्धि-विवेक विलोचन का सहारा लेकर अपने आवेष्ठन से संघर्ष करके उनके अनजान रहस्यों का उद्घाटन और उद्वाचन किया करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान यथार्थ ज्ञान का देदीप्यमान दीपक है, प्रायोगिक प्रकाश की दिव्य

क्रमशः.....४ पर

वेदामृतम्

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु, मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनिः।
पवमानः सन्तनिः सुन्वतामिव, मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति ।।

साम १३७१

सोम ओषधियों को कुंडी-सोटे से कूट-पीसकर उसके रस को कलश में पहुँचाने के लिए कलश के मुख पर लगी ऊन के बालों की छन्नी में डालते हैं और रस छन्नी में फैलकर छन-छनकर कलश में एकत्र हो जाता है। डंठलों के रेशे पृथक् करने के लिए सोमरस को छानने की आवश्यकता होती है। उस छने हुए सोमरस को पान करने पर मनन-शक्ति की वृद्धि होती है और मधुरता प्राप्त होती है। यह तो भौतिक सोम ओषधि की कथा है, पर इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक सोम है 'रसागार परमेश्वर', जिसके विषय में ऋषि की अनुभूति है कि- रसो वं सः। ध्यान-रूप कुंडी-सोटे से पीसने पर इसका रस निकलता है, जिसे दिव्यता का रस कहते हैं। पर इस रस के साथ भौतिक चेतना अपनी मलिनता भी मिला देती है, अतः पवित्र मन की छन्नी से छानकर ही इसे आत्मा-रूप कलश में पहुँचाना होता है।

आज अति हर्ष का विषय है कि यह दिव्यता का मधुर सोमरस मेरे आत्मा में प्रवेश कर रहा है। इसके आत्मा में प्रविष्ट होते ही मेरे अन्दर की सब शक्तियों उदबुद्ध और नवीनता से अनुप्राणित हो गई हैं। मनन-शक्ति मुझसे संयुक्त हो गई है। ऐसी अनुभूति हो रही है, जैसे अंग-अंग मधु से सिक्त हो गया है। मुख के अन्दर आनन्ददायक शब्दों का उच्चारण करनेवाली जिह्वा प्रेरित होकर प्रभु गीतों का गान कर रही है। ऐसा समाँ बंधा है कि सब-कुछ दिव्य होकर तरंगित और पुलकित हो रहा है। हे सोम प्रभु ! तुम अपने दिव्य रस को मेरे ग्रात्मा में सतत-रूप से बहाते रहो।

साभार-बेदमंजरी

पण्डित चमुपतिः रंगीला रसूल पुस्तक के लेखक एवं अद्वितीय विद्वान

-डॉ. विवेक आर्य

(जन्मजयन्ती पर विशेष)

(पंडित चमूपति आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक थे। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी व फारसी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। आप अच्छे कवि एवं लेखक भी थे। आपने कई भाषाओं में अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की है। उन्होने गुरुकुल में अध्यापन भी किया और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक व प्रचारक भी रहे।)

आचार्य पं. चमूपति महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख महापुरुषों में से एक महापुरुष थे। वह अतीव प्रतिभासम्पन्न मनीषी, त्यागी, तपस्वी, विद्वान तथा वैदिक धर्म व संस्कृति के लिये समर्पित असाधारण मनुष्य थे। ईसाई मत, इस्लाम तथा आर्य सिद्धान्तों का उन्हें गम्भीर ज्ञान था। इनकी लेखनी में जादू तथा भाषण में रस था।

पण्डित चमूपति का जन्म १५ फरवरी १८९३ को बहावलपुर के खैरपुर रामेवाला में हुआ था। बहावलपुर अब पाकिस्तान में है। उनका मूल नाम चम्पत राय था। उनके पिता का नाम बसन्दाराम मेहता था और माता का नाम उत्तमी देवी था। मैट्रिक तक की शिक्षा आपने अपने जन्म ग्राम खैरपुर में उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं मे प्राप्त की। बहावलपुर के इजर्टन

कालेज से आपने उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी में बी.ए. किया। बी.ए. तक आप देवनागरी अक्षरों से अनभिज्ञ थे। आर्यसमाज से प्रभावित होकर आपने संस्कृत में एम.ए. करने का संकल्प लिया और परीक्षा में सफलता प्राप्त कर

क्रमशः.....४ पर

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

स्वर्ग एवं नर्क

स्वर्ग की कामना सब करते हैं, और बड़े-बड़े सपने देखते हैं, कि ''स्वर्ग कहीं आसमान में है। मरने के बाद हम स्वर्ग में जाएंगे।''

''बंधुओ! स्वर्ग कहीं आसमान में नहीं है। यहीं इसी धरती पर है। आपके ही घरों में है। और हां, नरक भी यहीं पर है। वह भी आसमान में नहीं है। स्वर्ग नरक और महानरक सब कुछ यहीं पर है, इसी धरती पर।''

स्वर्ग कैसे बनता है? ''जब कोई माता-पिता और अध्यापक अपने बच्चों और विद्यार्थियों को अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं। वे बातें निश्चित रूप से अच्छी होती हैं, परंतु माता-पिता एवं बच्चे, अध्यापक तथा विद्यार्थी, यदि ये सब उन बातों पर आचरण करें, तो निश्चित रूप से इसी धरती पर आप ही के घरों में स्वर्ग देखने को मिल सकता है।''

परंतु यही तो समस्या है, कि ''माता-पिता जो बातें बच्चों को सिखाते हैं, उनका वे स्वयं पालन नहीं करते, तो बच्चे कैसे करेंगे? क्योंकि बच्चे वही कुछ करते हैं, जो उनके माता-पिता के आचरण में देखते हैं। माता-पिता के आचरण को देखकर ही बच्चे सीखते हैं।'' ''यही नियम अध्यापक और विद्यार्थियों पर लागू होता है। जैसे कि माता-पिता और अध्यापक अपने बच्चों और विद्यार्थियों को बताते हैं कि गुस्सा मत करो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, नशा मत करो आदि।'' ''अब माता-पिता और अध्यापक इन बातों पर स्वयं आचरण नहीं करते। इसलिए बच्चे और विद्यार्थी भी इन बातों पर आचरण नहीं करते। परिणाम आपके सामने है। किसी का कोई सुधार नहीं दिखाई देता। वह स्वर्ग केवल सपनों में ही रह जाता है, धरती पर नहीं दिखाई देता।''

''यदि माता-पिता और अध्यापक, तथा बच्चे और विद्यार्थी, उन सब बातों पर आचरण कर लें, जो वे कहते और सुनते हैं। तो यहीं इसी धरती पर आपको स्वर्ग दिखाई दे जाएगा।''

स्वर्ग क्या है? ''स्वर्ग का अर्थ है, जहां सभ्य सुशिक्षित धनवान बुद्धिमान अनुशासित सुखी लोग रहते हैं। वह यहीं इसी धरती पर आपके परिवारों में मिलेगा।''

और नरक क्या है? ''नरक इससे उल्टा है। जहां असभ्य अशिक्षित गरीब मूर्ख अनुशासनहीन और दुखी लोग रहते हैं। असभ्यता करते हैं। गाली गलौच करते हैं। खाने को कोई अच्छा भोजन नहीं मिलता। पहनने के लिए अच्छे कपड़े, रहने के लिए अच्छे घर मकान नहीं होते। ऐसे ही फुटपाथों और सड़कों पर वे सोते हैं। वही नरक है।'' ''और जो यहां पशु पक्षी कीड़े मकोड़े आदि प्राणी दिखाई देते हैं, यह महानरक है। सब कुछ यहीं पर है, इसी धरती पर है, जो कि आजकल चारों ओर दिखाई दे रहा है।''

''अतः जो कुछ आप कहते बोलते हैं, उस पर आचरण भी पूरी शक्ति के साथ अवश्य करें, और इस धरती को स्वर्ग बनाएं। तभी यह धरती रहने के योग्य बनेगी।''

– ''स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक की कलम से।

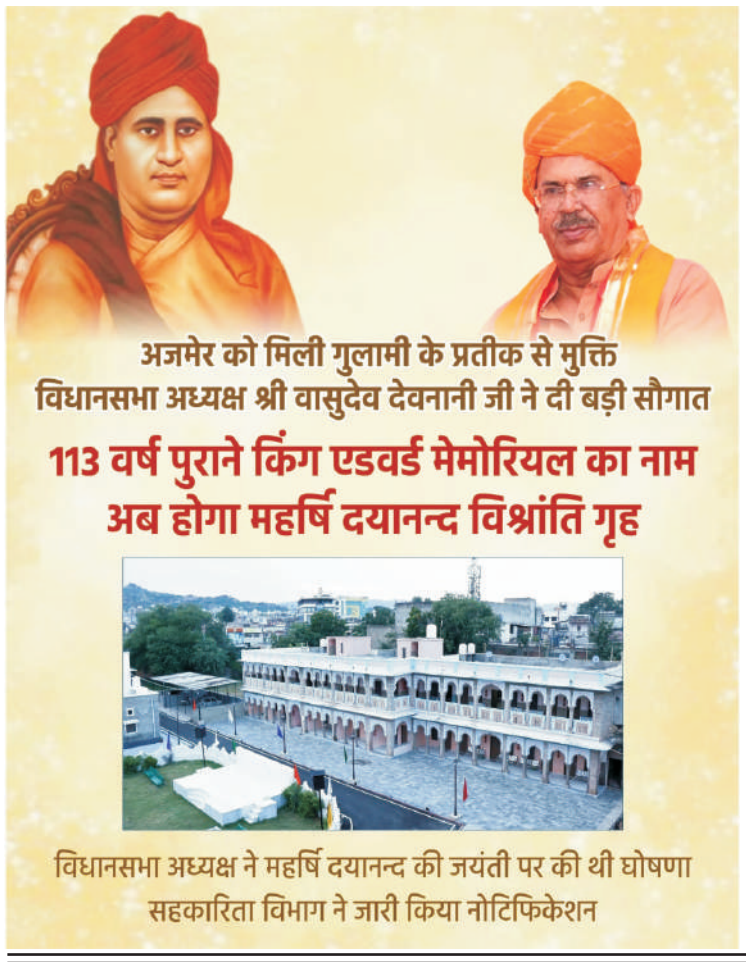

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

१५९-बस कहा था वास्ते उन के पैगम्बर खुदा के ने, रक्षा करो ऊंटनी खुदा की को, और पानी पिलाना उस के को बस झुठलाया उस को, बस पांव काटे उस के, बस मरी डाली ऊपर उन के, रब उन के ने।।

- मं० ७। सि० ३० सू० ९१। आ० १३।१४।।

(समीक्षक) क्या खुदा भी ऊंटनी पर चढ़ के सैल किया करता है? नहीं तो किस लिये रक्खी? और विना कयामत के अपना नियम तोड़ उन पर मरी रोग क्यों डाला ? यदि डाला तो उन को दण्ड किया, फिर कयामत की रात में न्याय और उस रात का होना झूठ समझा जायगा? फिर इस ऊंटनी के लेख से यह अनुमान होता है कि अरब देश में ऊंट, ऊंटनी के सिवाय दूसरी सवारी कम होती है। इस से सिद्ध होता है कि किसी अरब देशी ने कुरान बनाया है।।१५९।।

१६०-यों जो न रुकेगा अवश्य घसीटेंगे उस को हम साथ बालों माथे के वह माथा कि झूठा है और अपराधी हम बुलावेंगे फरिश्ते दोजख के को। -मं० ७। सि० ३० सू० ९६। आ० १५।१६। १८।।

(समीक्षक) इस नीच चपरासियों के काम घसीटने से भी खुदा न बचा। भला माथा भी कभी झूठा और अपराधी हो सकता है? सिवाय जीव के, भला यह कभी खुदा हो सकता है कि जैसे जेलखाने के दरोगा को बुलावा भेजे।।१६०।।

१६१-निश्चय उतारा हम ने कुरान को बीच रात कदर के और क्या जाने तू क्या है रात कदर की ? उतरते हैं फरिश्ते और पवित्रात्मा बीच उस के साथ आज्ञा मालिक अपने के वास्ते हर काम के।।

- मं० ७। सि० ३० सू० ९७। आ० १।२।४।।

(समीक्षक) यदि एक ही रात में कुरान उतारा तो वह आयत अर्थात् उस समय में उतरी और धीरे-धीरे उतारा यह बात सत्य क्योंकर हो सकेगी? और रात्री अन्धेरी है इस में क्या पूछना है? हम लिख आये हैं ऊपर नीचे कुछ भी नहीं हो सकता और यहां लिखते हैं कि फरिश्ते और पवित्रात्मा खुदा के हुक्म से संसार का प्रबन्ध करने के लिये आते हैं। इस से स्पष्ट हुआ कि खुदा मनुष्यवत् एकदेशी है। अब तक देखा था कि खुदा फरिश्ते और पैगम्बर तीन की कथा है। अब एक पवित्रात्मा चौथा निकल पड़ा। अब न जाने यह चौथा पवित्रात्मा क्या है? यह तो ईसाइयों के मत अर्थात् पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के मानने से चौथा भी बढ़ गया। यदि कहो कि हम इन तीनों को खुदा नहीं मानते. ऐसा भी हो, परन्तु जब पवित्रात्मा पृथक् है तो खुदा फरिश्ते और पैगम्बर को पवित्रात्मा कहना चाहिये वा नहीं ? यदि पवित्रात्मा है तो एक ही का नाम पवित्रात्मा क्यों? और घोड़े आदि जानवर, रात दिन और कुरान आदि की खुदा कसमें खाता है। कसमें खाना भले लोगों का काम नहीं।।१६१।।

अब इस कुरान के विषय को लिख के बुद्धिमानों के सम्मुख स्थापित करता हूँ कि यह पुस्तक कैसा है? मुझ से पूछो तो यह किताब न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया इसलिये कि लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो कुछ इस में थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझ को ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपातरहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है। इस के बिना जो कुछ इस में है सब अविद्या भ्रमजाल और मनुष्य के आत्मा को पशुवत् बनाकर शान्तिभङ्ग करा के उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है। और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भण्डार ही है। परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सब से सब प्रीति परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों। जैसे मैं अपना वा दूसरे मतमतान्तरों का दोष पक्षपात रहित होकर प्रकाशित करता हूँ। इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट, मेल होकर आनन्द में एकमत होके सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो। यह थोड़ा सा कुरान के विषय में लिखा। इस को बुद्धिमान् धार्मिक लोग ग्रन्थकार के अभिप्राय को समझ, लाभ लेवें। यदि कहीं भ्रम से अन्यथा लिखा गया हो तो उस को शुद्ध कर लेवें।

अब एक बात यह शेष है कि बहुत से मुसलमान ऐसा कहा करते और लिखा वा छपवाया करते हैं कि हमारे मजहब की बात अथर्ववेद में लिखी है। इस का यह उत्तर है कि अथर्ववेद में इस बात का नाम निशान भी नहीं है।

(प्रश्न) क्या तुम ने सब अथर्ववेद देखा है? यदि देखा है तो अल्लोपनिषद् देखो। यह साक्षात् उसमें लिखी है। फिर क्यों कहते हो कि अथर्ववेद में मुसलमानों का नाम निशान भी नहीं है।

अथाल्लोपनिषदं व्याख्यास्यामः,
अस्मांल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते ।
इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः ।
ह या मित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्कामः।।१।।
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः । अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ।। २।।
अल्लोरसूलमहामदरकबरस्य अल्लो अल्लाम् ।। ३।।
आदल्लाबूकमेककम्, अल्लाबूक निखातकम् ।।४।।
अल्लो यज्ञेन हुतहुत्वा। अल्ला सूर्यचन्द्रसर्वनक्षत्राः ।।५।।
अल्ला ऋषीणां सर्वदिव्याँ इन्द्राय पूर्व माया परममन्तरिक्षाः।। ६।।
अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम् ।।७।।
इल्लां कबर इल्लां कबर इल्लों इल्लल्लेति इल्लल्लाः ।।८।।
ओम् अल्ला इल्लल्ला अनादिस्वरूपाय अथर्वणाश्यामा हूं ह्रीं जनानपशूनसिद्धान्
जलचरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट् ।।९।।
असुरसंहारिणी हूं ह्रीं अल्लोरसूलमहमदरकबरस्य अल्लो अल्लाम् इल्लल्लेति इल्लल्लाः।।१०।।
इत्यल्लोपनिषत् समाप्ता।।

जो इसमें प्रत्यक्ष मुहम्मद साहब रसूल लिखा है इस से सिद्ध होता है कि मुसलमानों का मत वेदमूलक है।

(उत्तर) यदि तुम ने अथर्ववेद न देखा हो तो हमारे पास आओ आदि से पूर्ति तक देखो अथवा जिस किसी अथर्ववेदी के पास बीस काण्डयुक्त मन्त्रसंहिता अथर्ववेद को देख लो। कहीं तुम्हारे पैगम्बर साहब का नाम वा मत का निशान न देखोगे। और जो यह अल्लोपनिषद् है वह न अथर्ववेद में, न उसके गोपथ ब्राह्मण वा किसी शाखा में है। यह तो अकबरशाह के समय में अनुमान है कि किसी ने बनाई है। इस का बनाने वाला कुछ अर्बी और कुछ संस्कृत भी पढ़ा हुआ दीखता है क्योंकि इस में अरबी और संस्कृत के पद लिखे हुए दीखते हैं। देखो ! (अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते) इत्यादि में जो कि दश अंक में लिखा है, जैसे-इस में (अस्माल्लां और इल्ले) अर्बी और (मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते यह संस्कृत पद लिखे हैं वैसे ही सर्वत्र देखने में आने से किसी संस्कृत और अर्बी के पढ़े हुए ने बनाई है। यदि इस का अर्थ देखा जाता है तो यह कृत्रिम अयुक्त वेद और व्याकरण रीति से विरुद्ध है। जैसी यह उपनिषद् बनाई है, वैसी बहुत सी उपनिषदें मतमतान्तर वाले पक्षपातियों ने बना ली हैं। जैसी कि स्वरोपनिषद्, नृसिंहतापनी, रामतापनी, गोपालतापनी बहुत सी बना ली हैं।

(प्रश्न) आज तक किसी ने ऐसा नहीं कहा अब तुम कहते हो। हम तुम्हारी बात कैसे मानें ?

(उत्तर) तुम्हारे मानने वा न मानने से हमारी बात झूठ नहीं हो सकती है। जिस प्रकार से मैंने इस को अयुक्त ठहराई है उसी प्रकार से जब तुम अथर्ववेद, गोपथ वा इस की शाखाओं से से प्राचीन लिखित पुस्तकों में जैसे का तैसा लेख दिखलाओ और अर्थसंगति से भी शुद्ध करो तब तो सप्रमाण हो सकता है।

(प्रश्न) देखो! हमारा मत कैसा अच्छा है कि जिस में सब प्रकार का सुख और अन्त में मुक्ति होती है।

(उत्तर)-ऐसे ही अपने-अपने मत वाले सब कहते हैं कि हमारा ही मत अच्छा है, बाकी सब बुरे। बिना हमारे मत के दूसरे मत में मुक्ति नहीं हो सकती। अब हम तुम्हारी बात को सच्ची मानें वा उन की? हम तो यही मानते हैं कि सत्यभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे हैं और बाकी वाद, विवाद, ईर्ष्या, द्वेष, मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं। यदि तुम को सत्य मत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो।

इसके आगे स्वमन्तव्यामन्तव्य का प्रकाश संक्षेप से लिखा जायगा।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविभूषिते यवनमतविषये, चतुर्दशसमुल्लासः सम्पूर्णः।। १४।।

क्रमशः अगले अंक में.....

ऋषि दयानन्द के बतायें मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनायें

-मनमोहन कुमार आर्य

हम वेदों के पुनरुद्धार एवं देश से अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करने के लिये ऋषि दयानन्द सहित उनके गुरु स्वामी विरजानन्द, स्वामी दयानन्द के संन्यास गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी, स्वामी जी के योग-गुरुओं, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं. श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द एवं उनके अब तक हुए सभी अनुयायियों को सादर नमन करते हैं। ऋषि दयानन्द को सन् १८३९ की शिवरात्रि को बोध हुआ था, तब लोगों के पास सच्चे शिव के स्वरूप, उसकी प्राप्ति कैसे होती है, आदि विषयों का ज्ञान नहीं था। मृत्यु क्यों होती है, मृत्यु पर क्या विजय पाई जा सकती है या नहीं, पाई जा सकती है तो कैसे और यदि नहीं पाई जा सकती है तो क्यों, इन प्रश्नों के उत्तर किसी के पास नहीं थे। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर ऋषि दयानन्द ने अपने माता-पिता व परिवार सहित अपनी जन्म भूमि टंकारा का त्याग किया था और अहर्निश अपने उद्देश्य के प्रति सजग रहकर उसे पूरा करने के लिये तत्पर व गतिशील रहे थे। ऋषि के तप व प्रार्थना को स्वीकार कर ईश्वर ने उन्हें न केवल इन प्रश्नों के उत्तर व समाधान प्रदान किये अपितु इस सृष्टि के अधिकांश अन्य रहस्यों का अनावरण भी किया था। ऋषि का सौभाग्य था कि उन्हें स्वामी विरजानन्द जी जैसे योग्य व अपूर्व आचार्य मिले थे। ऋषि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी को गुरु दक्षिणा में अपने शिष्य से किसी भौतिक पदार्थ की चाहना नहीं थी अपितु वह चाहते थे कि ऋषि दयानन्द वेद ज्ञान को जन जन तक पहुंचायें, इसका परामर्श व प्रेरणा उन्होंने दयानन्द जी को की थी। ऋषि दयानन्द ने जिस ज्ञान प्राप्ति के लिए अपने माता-पिता व घर को छोड़ कर वन, उपवन, पर्वत व स्थान-स्थान की खाक छानी थी, वह उसे व उससे कहीं अधिक ज्ञान प्राप्त कर चुके थे। ईश्वर का साक्षात्कार भी उन्हें हुआ था। कोई मनुष्य अपने जीवन में वेदों का अधिकतम जो ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वह ऋषि दयानन्द प्राप्त कर चुके थे। ऋषि के प्रयत्नों से देश व संसार को पंचमहायज्ञविधि, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, ऋग्वेद-यजुर्वेदभाष्य, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, पूना-प्रवचन आदि ज्ञान-सम्पदा प्राप्त हुई। हमारा सौभाग्य है कि हम ईश्वर, जीवात्मा, चराचर जगत, मनुष्य के कर्तव्य, जीवात्मा का लक्ष्य व उसकी प्राप्ति के साधनों आदि को ऋषि प्रदत्त सत्य-ज्ञान के अनुरूप जानते हैं। हम आश्वस्त हैं कि मृत्यु के बाद हमारा पुनर्जन्म होगा। हम मोक्ष के लिये भी पुरुषार्थ कर सकते हैं। किसी भी ज्ञानी, ईश्वरोपासक एवं पुरुषार्थी मनुष्य का मोक्ष हो सकता है और यदि नहीं होगा तो उसका पुनर्जन्म अवश्य श्रेष्ठ व उत्तम होगा। हम पुनर्जन्म लेकर मानव व देव बनेंगे और भावी जन्मों में मोक्षगामी बनकर व ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि मोक्ष प्राप्त न भी कर सके तो हम सच्चे मनुष्य व देव बनकर मनुष्यता व प्राणीमात्र का कल्याण करने का कार्य तो कर ही सकते हैं जैसा कि ऋषि दयानन्द व उनके अन्य बड़े व छोटे अनुयायियों ने किया है।

ऋषि दयानन्द ने बोध को प्राप्त होने के बाद सच्चे शिव व मृत्यु की औषधि की खोज की। वेदाध्ययन, वेदाचरण, ईश्वरोपासना, योग, ध्यान, समाधि, सत्याचरण, अपरिग्रह, सात्विक जीवन, परोपकार के कार्य आदि को धारण किया। उन्होंने संसार से अविद्या को दूर करने और विद्या का प्रकाश करने के लिये वेद प्रचार किया। असत्य मान्यताओं का खण्डन तथा सत्य मान्यताओं की स्थापना के लिये जीवन का एक-एक पल व्यतीत किया। मनुष्यों को मनुष्य के कर्तव्यों से परिचित कराया। पंच-महायज्ञ का विधान किया। इसे तर्क व युक्तियों से पुष्ट किया। बताया कि जो मनुष्य ईश्वरोपासना नहीं करता वह ईश्वर के उपकारों के लिए उसका धन्यवाद न करने के कारण कृतघ्न होता है। जो अग्निहोत्र यज्ञ नहीं करता वह वायु, जल, पृथिवी, आकाश आदि में प्रदुषण करने के कारण ईश्वर व अन्य देशवासियों का अपराधी होता है। यज्ञ न करने से मनुष्य को पाप लगता है जिसका परिणाम दुःख होता है। माता-पिता के भी सन्तानों पर असंख्य उपकार होते हैं। उनकी आज्ञा पालन, वृद्धावस्था में

उनका पालन व पोषण तथा उनकी आत्माओं को सन्तुष्ट रखना सभी सन्तानों का कर्तव्य व धर्म होता है। जो ऐसा करते हैं वह प्रशंसनीय हैं और जो नहीं करते वह निन्दनीय हैं। अतिथि विद्वानों को कहते हैं जो अपने किसी स्वार्थ की पूर्ति के लिये नहीं अपितु अपने कर्तव्य, समाज तथा देश का हित करने के लिये रात्रि-दिवा स्थान-स्थान पर विचरण करके अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि और लोगों के दुःखों का हरण करते हैं। ऐसे अतिथियों की मन, वचन व कर्म से सेवा करना समाज के सभी मनुष्यों का कर्तव्य होता है। ऐसा करने से मनुष्य ज्ञान व सामाजिक दृष्टि से उन्नति करता है। देश व समाज उन्नत व सुदृण होता है। ऋषि दयानन्द के जीवन में यह सभी गुण पाये जाते थे। इसी प्रकार से परमात्मा के बनाये पशु व पक्षियों सहित सभी प्रकार के प्राणियों व कीट-पतंगों के प्रति भी दया व करूणा का भाव रखते हुए उनके पोषण व जीवनयापन में सभी मनुष्यों को सहायक बनना चाहिये। ऐसा करके ही हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी होते हैं।

ऋषि दयानन्द के समय हमारा समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों एवं बुराईयों से ग्रस्त था। ऋषि ने सभी सामाजिक कुरीतियों व परम्पराओं का तर्क, युक्ति सहित वेद के प्रमाणों से खण्डन किया। अशिक्षा को उन्होंने मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया। उन्होंने शिक्षा को मनुष्य का अधिकार व राजा का कर्तव्य बताया। ऋषि के अनुसार वह माता-पिता दण्डनीय होने चाहिये जो अपने बच्चों को सरकार की ओर से संचालित निःशुल्क गुरुकुलों व पाठशालों में पढ़ने के लिये नहीं भेजते हैं। ऋषि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य व्रत के पालन की महिमा को भी रेखांकित किया। उन्होंने ब्रह्मचर्य से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग दिखाया। ब्रह्मचर्य विषयक सभी भ्रमों को उन्होंने दूर किया। एक गृहस्थी जो संयम एवं नियमों का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करता है, वह भी ब्रह्मचारी होता है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवनचर्या से शिक्षा दी कि प्रत्येक मनुष्य को प्रातः ब्रह्म-मुहुर्त अर्थात् ४.०० बजे जाग जाना चाहिये। वेद मन्त्रों से ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये। शौच आदि से निवृत होकर सन्ध्या एवं यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिये। प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिये। सात्विक व शाकाहारी भोजन करना चाहिये। शरीर में विकार उत्पन्न करने वाले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। दुग्ध, घृत, मक्खन, फल सहित शुद्ध अन्न का सेवन करना चाहिये। आलस्य का त्याग कर पुरुषार्थी होना चाहिये। धन आदि भौतिक पदार्थों का परिग्रही न बन कर देश व समाज के हितों का ध्यान रखते हुए जीवनयापन करना चाहिये। ईश्वरभक्त एवं देशभक्त होना चाहिये। किसी प्रकार का भेदभाव किसी के प्रति नहीं करना चाहिये। गिरे हुओं को ऊपर उठाना चाहिये। सबको सदाचार व वेद की मान्यताओं से परिचित करना चाहिये और अविद्या का खण्डन निर्भीकता से करना चाहिये। समाज में यदि अविद्या होगी तो इससे सभी को दुःख प्राप्त होता है। ऋषि दयानन्द ने यह भी बताया कि वेद से इतर जितने भी मत-मतान्तर हैं उन सबमें अविद्या विद्यमान है। यह अविद्या दूर होनी चाहिये। इसके लिये उन्होंने न केवल सत्यार्थप्रकाश के ११ से १४ तक के समुल्लास लिखे अपितु अपने जीवन में मौखिक प्रचार करते हुए भी मत-मतान्तरों की अविद्या व असत्य का पुरजोर खण्डन किया। ऋषि दयानन्द ने हमें इतना कुछ दिया है कि हम उसे सम्भाल पाने में असमर्थ हैं। हम पुरुषार्थ करें तो वेदों के विद्वान व ऋषि तक बन सकते हैं। इसके लिये ऋषि दयानन्द ने हमें सभी साधनों से परिचित कराया है व सभी साधन उपलब्ध कराये हैं।

ऋषि दयानन्द के समय में हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों से पूर्व हम मुसलमानों के पराधीन रहे। इन सभी ने हमारे पूर्वजों पर अमानवीय अनेक जघन्य अपराध किये। हमें इनसे शिक्षा लेकर अपनी उन सभी बुराईयों को दूर करना है जिससे हम पुनः पराधीन न हों। पराधीनता का कारण अविद्याजनित मत-मतान्तर, सामाजिक भेदभाव वा जन्मना जातिवाद, मिथ्या परम्परायें एवं वेदाचरण के विपरीत आचरण करना था। शोक है कि यह सब कारण आज भी हिन्दू समाज व आर्यों में विद्यमान हैं। ऋषि दयानन्द ने ही देश की आजादी का मार्ग सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में सुझाया था। आजादी प्राप्त होने में ऋषि दयानन्द के अनुयायियों का सबसे अधिक योगदान है। यदि ऋषि दयानन्द ने आजादी की प्रेरणा न की होती और आर्यसमाज व उसके अनुयायियों ने बिना किसी स्वार्थ के आजादी में सक्रिय भाग न लिया होता, तो हमारा अनुमान है कि शायद आजादी का आन्दोलन भी आरम्भ न होता। इस अवसर पर हमें पं० श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह जी के आर्य परिवार को भी स्मरण करना चाहिये। हमें स्मरण है कि जब शहीद भगत सिंह लाहौर से लाला लाजपतराय की हत्या का बदला लेकर कलकत्ता पहुंचे थे तो वहां उन्हें आर्यसमाज मन्दिर में आश्रय मिला था। देश को आजादी की प्रेरणा कर आजादी दिलाने वाले महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के योगदान को भी हमें स्मरण करना चाहिये।

सारा संसार ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदत्त सत्य ज्ञान के लिये उनका ऋणी है। देश उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकता। उनके बताये मार्ग का अनुकरण व अनुसरण कल्याण का मार्ग है और मत-मतान्तरों की शिक्षाओं में निमग्न रहना मनुष्य को ईश्वर को प्राप्त न कराकर प्रवृत्ति व लोभ के मार्ग पर ले जाता है जहां कर्म फल भोग सुख-दुःखादि व जीवात्मा के आवागमन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। पुनर्जन्म भी इससे सुधरता नहीं अपितु हमारी दृष्टि में बिगड़ता ही है। जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है उसे मांसाहार, मदिरापान, नशा, धूम्रपान, अधिक भोजन तथा धन सम्पत्ति का संग्रह वा परिग्रह छोड़कर अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में ही यथोचित पुरुषार्थ करना चाहिये।

●●●

पृष्ठ.....१ का शेष (-पं. चमूपति जी)

प्रशंसनीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

विद्यार्थी जीवन में आप सिख मत की ओर आकर्षित हुए थे। आपने सिख मत की पुस्तक ''जपुजी'' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। इस पुस्तक से निकटवर्ती क्षेत्रों में आपको प्रसिद्धि प्राप्त हुई। जन्म से दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण पौराणिक विचारधारा से आपकी संस्तुष्टि नहीं हुई, जिसका परिणाम यह हुआ कि आप नास्तिक बन गए। इसके पश्चात आपने स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का अध्ययन किया और कुछ समय पश्चात महर्षि दयानन्द के साहित्य का पारायण किया। इस साहित्यिक ऊहापोह से आप पुनः आस्तिक बन गए। अब आप प्राणपण से आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेने लगे। सन् १९१९ में आपने स्वामी दयानन्द के पद्यमय उर्दू जीवन चरित्र ''दयानन्द आनन्द सागर'' का लेखन व प्रकाशन किया। इस ग्रन्थ में आपने स्वामी दयानन्द जी के लिये ''सरवरे मखलूकात'' अर्थात् 'मानव शिरोमणि' विशेषण का प्रयोग किया है।

गुरुकुल से उनका सम्बन्ध बहुत पुराना था। वे मुल्तान के गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता बने थे और उस गुरुकुल का संचालन करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली थी। आचार्य रामदेव उनके गुणों पर मुग्ध होकर उन्हें लाहौर ले आये थे और 'दयानन्द सेवासदन' का आजीवन सदस्य बनने के लिये तैयार किया था। अनेक वर्षों तक पण्डित जी ने लाहौर में रहकर 'आर्य' का सम्पादन किया। वक्ता और लेखक के रूप में आर्यसमाज में उनकी खूब ख्याति हुई।

दयानन्द सेवासदन के समाजोत्थान के कार्यों को करते हुए आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी पत्र ''वैदिक मैगजीन'' एवं हिन्दी पत्र ''आर्य'' के सम्पादन का कार्य भी किया। आपकी विद्वता एवं निष्ठा के प्रभाव से इन पत्रों ने अपूर्व सफलता प्राप्त कीं और अविभाजित पंजाब सहित देशभर में दोनो पत्र लोकप्रिय हुए। सन् १९२६ से आरम्भ कर आठ वर्षों तक आपने गुरुकुल कांगड़ी में उपाध्याय, अधिष्ठाता एवं आचार्य आदि पदों को सुशोभित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से सन् १९२५ में आप वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचारार्थ अफ्रीका गये। इस यात्रा के समय पौराणिक विद्वान पं. माधवाचार्य ने आपको शास्त्रार्थ के लिये आमंत्रित किया जिसमें वह पंडित चमूपति जी को अपमानित कर सकें और अपने शिष्यों पर अपना प्रभाव जमा सकें। अनेक लोगों की उपस्थिति में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। शास्त्रार्थ में प्रसंगवश पंडित चमूपति जी ने शालीनतापूर्वक कहा कि पं. माधवाचार्य की पत्नी को पुत्री मानने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं, अपितु प्रसन्नता है। निराली शैली में कहे गए इन शब्दों का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। शास्त्रार्थ उनके इन्हीं शब्दों पर समाप्त हो गया। पं. माधवाचार्य की पं. चमूपति जी का अपमान करने की योजना विफल हो गई।

एक बार पं. चमूपति वैदिक साधना आश्रम तपोवन, देहरादून आये थे। एक दिन जब उन्होंने तपोवन के निकट सरोवर में एक हिन्दू को मछलियां पकड़ते हुए देखा तो उनके मुख से निकला ''देखो यह इस्लामी हिन्दू धर्म है''। अपने एक व्याख्यान में एक बार पंडित जी ने मुसलमानों की हज की रीति एवं व्यवहार का उल्लेख कर भावपूर्ण शब्दों में कहा, ''हज करते समय कोई मोमिन सिर की जूं तक नहीं मार सकता, सिला हुआ वस्त्र भी नहीं पहन सकता। यह है वैदिक इस्लाम''। इस्लाम के इस अहिंसक रूप के पंडित चमूपति जी समर्थक थे।

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि सत्य को मानना एवं मनवाना तथा असत्य को छोड़ना और छुड़वाना उन्हें अभीष्ट है। इसी को वह मनुष्य जीवन का लक्ष्य स्वीकार करते थे। पं. चमूपति जी ने ऋषि दयानन्द जी के विचारों को सर्वात्मा अपनाया व उनका अपने उपदेशों व रचनाओं के द्वारा प्रचार किया। दिनांक १५ जून सन् १९३७ को ४४ वर्ष की आयु में लाहौर में आपका निधन हुआ।

आर्यसमाज के वयोवृद्ध विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आपकी जीवनी लिखी है। जिज्ञासु जी ने पं• चमूपति जी के लेखों व लघु पुस्तकों का दो खण्डों में एक संग्रह सम्पादित किया था जो वर्षों पूर्व हिण्डोन सिटी से आर्य साहित्य के यशस्वी प्रकाशक श्री प्रभाकरदेव आर्य जी ने ''विचार वाटिका'' के नाम से प्रकाशित किया था। अब यह ग्रन्थ अनुपलब्ध है। प्रा. जिज्ञासु जी ने पं. चमूपति जी की उर्दू पुस्तक ''दयानन्द आनन्द सागर'' का हिन्दी अनुवाद कर उसे भी प्रकाशित कराया है। इस पुस्तक के कारण ही चमूपति जी को मुस्लिम रियासत बहावलपुर से अपने निवास गृह से निर्वासित किया गया था। कितना बड़ा त्याग उन्होंने किया था इसका शायद हम अनुमान नहीं कर सकते। पं. चमूपति जी की अनेक उर्दू पुस्तकों के अनुवाद भी सुलभ हैं।

पं. चमूपति संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के उच्चकोटि के विद्वान, लेखक, कवि एवं वक्ता थे। उन्होने अपने जीवन में देश, धर्म एवं संस्कृति के लिये जो कार्य किये और इन पर हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू में जो उच्च कोटि की रचनायें दी हैं।

हिन्दी : सोम सरोवर, जीवन ज्योति, योगेश्वर कृष्ण, वृक्षों में आत्मा, हमारे स्वामी, रंगीला रसूल उर्दू दयानन्द आनन्द सागर, मरसिया ए गोखले, जवाहिरे जावेद, चौदहवीं का चांद, मजहब का मकसद आदि अंग्रेजी : महात्मा गांधी ऐण्ड आर्यसमाज, यजुर्वेद (अनुवाद), गिलिम्पसेस आफ दयानन्द। सोम-सरोवर बहुत उच्च कोटि की रचना है। उन्होंने इस पुस्तक में सामवेद के मन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या की है। गद्य में होने पर भी इस पुस्तक को पढ़कर पद्य का सा आनन्द आता है। एक बार श्री वीरेन्द्र जी, सम्पादक, आर्यमर्यादा, जालन्धर ने सम्पादकीय में लिखा था कि इस पुस्तक पर उन्हें नोबेल पुरस्कार दिया जा सकता था परन्तु पुरस्कार देने में पक्षपात के कारण वह इस पुस्तक पर पुरस्कार प्राप्त नहीं कर सके।

पं. चमूपति जी की ऋषि दयानन्द के बारे में कहते हैं-

आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक संसार पर दयानन्द का सिक्का है। मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल लिए हैं, धर्म पुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है, महापुरुषों की जीवनियों में परिवर्तन किया है। स्वामी जी का जीवन इन जीवनियों में बोलता है। ऋषि मरा नहीं करते, अपने भावों के रूप में जीते हैं। दलितोद्धार का प्राण कौन है? पतित पावन दयानन्द। समाज सुधार की जान कौन है? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा के प्रचार की प्रेरणा कहां से आती है? गुरुवर दयानन्द के आचरण से। वेद की जय जयकार कौन पुकारता है? ब्रह्मार्षि दयानन्द। माता आदि देवियों के सत्कार का मार्ग कौन सिखाता है? देवी पूजक दयानन्द। गोरक्षा के विषय में प्राणिमात्र पर करूणा दिखाने का बीड़ा कौन उठाता है? करुणानिधि दयानन्द।

आओ ! हम अपने आप को ऋषि दयानन्द के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नाड़ी नाड़ी से ध्वनि उठे-महर्षि दयानन्द की जय।

पापों और पाखण्डों से ऋषि
राज छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराश्रित जाति को,
निर्भीक बनाया था तूने।।
बलिदान तेरा था अद्वितीय हो
गई दिशाएं गुंजित थी।
जन जन को देगा प्रकाश वह

पृष्ठ.....१ का शेष (परीक्षित मंडल 'प्रेमी')

आभा है, मानव कल्याण की साधना का सर्वोन्मुखी पंचमराग है. कष्ट भरे जीवन के लिए अनोखे रसायन हैं और पाखंड एवं कुरूप कुरीतियों की छाती पर प्रचण्ड पौरुष का पद प्रहार है। क्लेष कुंठा तथा परंपरा के अंधविश्वासों के जमे हुए पत्थर को प्रचण्ड वेग से तोड़ सकने की सशक्त साधना के दिव्य स्वरों का कलनिनाद है।

यदि विज्ञान हमारी सर्वतोन्मुखी प्रगति की कनकाभ कुंजियों में से एक है तो अध्यात्म साधना आत्मबोध तथा जगतबोध के अमृतासव की माधुरी से सिक्त दूसरा मधुचक्र है, जिसकी सतत सघन साधना से निखिल मानव की अन्तरात्मा का सितार आनन्दमयी रागिनी में बज उठता है। यह हमारे आत्मदर्शन एवं आत्म परिक्षण का दिव्यालोक स्तंभ है. जो हमारे मुर्झाते हृत्तंत्री को संजीवनी की हरीतिमा से मुकुलित, पुष्पित-पल्लवित कर देता है। यह हमारे मन प्राणों का अनुरंजन ही नहीं करता, वरन् हमारी चंचल चित्तवृत्तियों का परिष्कार, संवर्धन और संयमन भी करता है जो हमें केवल भौतिक आनन्द-उल्लास ही नहीं अपितु ब्रहमानन्द सहोदर अमद आनन्द उमंग की उपलब्धि भी कराता है। इसकी सघन साधना से अन्तर्मन की सारी विदुपता, अकर्मण्यता और निरसता दूर हो जाती है। इससे हमारे जीवन के मरूस्थल में सुषमामय, मधुमय अमृतज्योति की वर्षा होने लगती है। इसकी सप्राण साधना से हमारी कुंभलायी प्राणवेला में नई संचेतना, नई स्फूर्ति, नई ताजगी, नई जीवंतता और नई जीवनी शक्ति लौट आती है। अतः इसे भारतीय जीवन दर्शन, दाक्षिण्यमय आचरण तथा साधना पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है जो हमें अमृतत्त्व प्राप्त कराती है- ''विद्ययामृतमश्नुते तथा जो हमें मुक्ति प्रदान करती है-''सा विद्या या विमुक्तये।'' इसके निरंतर उद्योग से हमारे जीवन में लौकिक और पारलौकिक के सारे वातायन अनावृत्त हो जाते हैं। इसकी सतत साधना से आत्मिक तृप्ति, मानसिक तुष्टि तथा स्वर्ग अपवर्ग के सुख-आनन्द-उल्लास की प्राप्ति होती है। तभी तो भारतीय साधना पद्धत्ति में वेदान्त के समान प्रतिष्ठा यदि किसी अन्य साधना पद्धति को मिली है, तो यह सर्वतोभावेन अध्यात्म ही है। भारतीय धर्म, दर्शन तथा चिंतन के सभी क्षेममय क्षेत्रों-उपक्षेत्रों को अध्यात्म ने प्रेरित-प्रभावित कर अपने परा-अपरा ज्ञानालोक से आलोकित किया है।

अनादिकाल से कलधौत के घाम अध्यात्म प्रवण भारत में अध्यात्म और विज्ञान की अविरल अमल-धवल की साधना प्रचलित रही है जो मानव जीवन को दिव्यालोक से प्रोद्भासित कर महिमामंडित करती रही है। इसी संदर्भ में उन्नसवीं सदी के महान वेदार्थ क्रान्तद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अध्यात्म एवं विज्ञान परक कतिपय स्वर्णिम सिद्धान्त तथा मान्यताएँ यहाँ द्रष्टव्य हैं। इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास, पृष्ठ २८२ में सृष्टि उत्पत्ति के संबंध में लिखा है- ''जब सृष्टि का समय आता है तब परमात्मा उन परमसूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है। उसकी प्रथम अवस्था में परमसूक्ष्म प्रकृति रूप कारण से कुछ स्थूल होता है, तब उसका नाम महत्तत्त्व और उससे कुछ स्थूल होता है उसका नाम अहंकार और अहकार से मिन्न-भिन्न पाँच सूक्ष्मभूत, श्रोत, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियवाक हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा से पाँच कर्मेन्द्रियाँ है और ग्यारहवाँ मन कुछ स्थूल उत्पन्न होता है। और उन पचतन्मात्राओं से अनेक स्थूलावस्थाओं को प्राप्त होते हुए क्रम से पाँच स्थूलभूत जिनको हमलोग प्रत्यक्ष देखते हैं उत्पन्न होते हैं। उनसे नाना प्रकार की औषधियों, वृक्ष आदि, उनसे अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से शरीर होता है।''

ऊपरवर्णित ''परमसूक्ष्म पदार्थ से तात्पर्य है एक अभौतिक, अविभाज्य, अखण्ड अरूप तथा अपने आप में पूर्ण स्थिर नित्य पदार्थ है. जो अत्यन्त रहस्यमय चिन्मय तत्त्व है और प्रत्येक विखण्डन के बावजूद अपने घनत्व एवं पिण्डत्व में सदा बना रहता है, अर्थात् यह वह मूलतत्त्व है जिसका संघात होने पर असंख्य सृष्टि की उत्पत्ति होती है. जिसे भारतीय मनीषियों, ऋषियों और दार्शनिकों ने अविकारिणी प्रकृति अथवा अजा' कहा है- ''अजामेकां लोहित शुक्लकृष्णां।'' अर्थात् एक न उत्पन्न होने वाली प्रकृति है जिसकी कार्यदशा शुक्ल है आरंभ रक्त है और आरंभपूर्वदशा कृष्ण है। इस उपनिषद वचन ने ऊपरिकथित तथ्य को स्पष्ट कर दिया है कि अभाव नहीं था। प्रत्युत् 'अजा' अर्थात् न उत्पन्न होने वाली प्रकृति थी। श्रीमद्भगवद्गीता २/१६ में भी स्पष्ट कहा गया है- ''नासतो विद्यते भावो नाभावी विद्यते सतः।'' इस मूल तत्त्व को महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में नित्य परिमण्डल'' कहा है। इससे विदित होता है कि अध्यात्म की मूल विचारधारा तथा विज्ञान का सिद्धान्त सत्य ऋत पर आधारित है। अतः इनमें दर्शाए गए बुनियादी सिद्धान्त हर परिस्थिति में अपनाए जाने योग्य है और अनुकरणीय है। परा-अपरा विज्ञान के मर्मज्ञ-मनीषी स्वामी दयानन्द सरस्वती परमहंस सत्य-ऋत विज्ञान के संवाहक थे। इन्होंने अपने अप्रतिम गत्यात्मक व्यक्तित्व तथा ऋतंभरा कारयित्री प्रतिभा प्रभा के नीर-क्षीर विवेक विलोचन और वैज्ञानिक-आध्यात्मिक दृष्टि से पराचिन्मय सत्ता को स्वीकारते हुए कहा है कि परमात्मा का स्वरूप 'अनंत' है। अर्थात् ''अप्रेमय, असीम, अक्षय, अविनाशी और जिसका कोई अन्त न हो है। सापेक्षवाद के जनक विश्व के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने दिक्काल से परे चतुर्थ आयाम (फोर्थ डाईनेंशन) की खोज कर विश्व के समक्ष एक नए रहस्य पर क्षीराश्मि डाला है। आइन्स्टाइन का मानना है कि 'फोर्थ डाईमेंशन' पर वस्तु का स्थूल रूप दिखाई नहीं पड़ता। मानवीय ज्ञान की पकड़ सीमा त्रिआयामिक विश्व तक है। यह दृश्य जगत लंबाई, चौडाई, ऊँचाई अथवा गहराई के अंतर्गत आता है। हमारी चतुर्दश इन्द्रियों की बनावट भी ऐसी ही है कि वे तीन आयामों वाली स्थूल सृष्टि भर का अनुभव कर पाती है। इसके परे परमपुरुषोत्तम परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म दिव्य है। अतः उसे इन्द्रियों से हम कैसे ग्रहण कर सकते हैं? मूर्धन्य- वैज्ञानिक आइन्स्टाइन तथा पराविज्ञानाचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का लक्ष्य इसी 'पराचिन्मय ऋतप्रवीत भूयसीज्योति की ओर है ऐसा प्रतीत होता है, इसका अपना महत्त्व अक्षुण्ण है।

मो०- ९१६२२०८००५

धर्म प्रचार पण्डित लेखराम जी आर्य पथिक

(पंडित जी के लेखों का संग्रह "कुलयात आर्य मुसाफिर" से उनका प्रसिद्द लेख धर्म प्रचार प्रकाशित किया जा रहा हैं। यह लेख पंडित जी द्वारा १८९० के दशक लिखा गया था। यह लेख भारत देश में विधर्मी मत के इतिहास और उनके समाधान को एतिहासिक प्रमाण देकर हमें मार्ग दर्शन देता हैं। पंडित जी को सच्ची श्रद्धान्जलि उनके मिशन और उनके अंतिम सन्देश "तहरीर (लेखन) और तकरीर(शास्त्रार्थ) का कार्य बंद नहीं होना चाहिए" को यथार्थ करके ही होगी। आज के युवा देश का भविष्य हैं। आशा हैं पंडित जी के जीवन से धर्म, जाति और देश की सेवा का सभी युवा आज के दिन संकल्प लेगे।)

धर्म प्रचार

हमारी आर्य जाति अविद्यान्धकार की निद्रा में सो गई है। अब इसे जागते हुए संकोच होता है कहां वह ऋषि मुनियों का पवित्र युग और कहाँ उनकी वर्तमान संतति की यह दुर्गति। त्राहि माम् त्राहि माम्।

प्रिय भाईयो ! ४९९० वर्ष हुए जबकि महाराजा युधिष्ठर का चक्रवर्ती धर्मराज पृथ्वी में वर्तूतमान था। उस समय कोई मुसलमान, कोई ईसाई, कोई बौद्ध, कोई जैन इस भारतवर्ष में विद्यमान नहीं था। प्रत्युत सारे संसार में भी कहीं उनका चिन्ह तक न था। समस्त प्रजा वैदिकधर्म और शास्त्रोक्त कर्म में संलग्न थी।सदियों पश्चात जब अविद्या के कारण मद्यमाँस, व्याभिचार आदि इस देश में बढ़ने लगा।तब २४९० वर्ष बीते कि नेपाल प्रान्त में एक साखी सिंह नामक व्यक्ति ने जो नास्तिक था बुद्धमत चलाया। राजबल भी साथ था। उसी लोभ से बहुत से पेट पालक ब्राह्मण उसके साथ हो गए जिससे बुद्धमत सारे भारत में फैल गया। काशी, कश्मीर, कन्नौज के अतिरिक्त कोई नगर भारत में ऐसा न रहा जो बौद्ध न हो गया हो।जब यह मत बहुत बढ़ गया और लोग वेदधर्म से पतित हुए। यज्ञोपवीत आदि संस्कार छोड़ बैठे।तब दो सौ वर्ष के लगभग हुए कि एक महात्मा शंकर स्वामी (जिसे लोग स्वामी शंकराचार्य भी कहते हैं) ने कटिबद्ध हो शिष्यों सहित बौद्धों से शास्त्रार्थ करने आरम्भ किये। भला नास्तिक लोगों के हेत्वाभास वेद शास्त्रज्ञ के सम्मुख क्या प्रभाव डाल सकते थे ?

एक दो प्रसिद्ध स्थानों पर विजयी होने के कारण शंकर स्वामी का सिंहनाद दूर २ तक गुंजायमान हो उठा। बहुत से राजाओं ने वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। दस बारह वर्ष में ही शंकराचार्य के शास्त्राथों के कारण समस्त देश के बौद्धों में हलचल मच गई। शंकराचार्य के शास्त्रार्थों में यह शर्तें होती थीं कि :-

(१) जो पराजित हो अर्थात शास्त्रार्थ में हारे वह दूसरे का धर्म स्वीकार करे।

(२) यदि साधू हो तो संन्यासी का शिष्य हो जाए।

(३) यदि यह दोनों बातें स्वीकार नहीं तो आर्यावर्त देश छोड़ जाये।

इन तीन नियमों के कारण करोड़ों बौद्ध और जैन पुनः वैदिक धर्म में आए और प्रायश्चित किया। उनको शंकर स्वामी ने गायत्री बताई। यज्ञोपवीत पहनाए। जो बहुत हठी थे और पक्षपात की अग्नि में जल रहे थे। इस प्रकार के लाखों व्यक्ति आर्यावर्तूत से निकल गए।राजाओं की ओर से कश्मीर, नैपाल, कन्याकुमारी, सूरत, बंगाल आदि भारत के सीमान्त स्थानों पर संन्यासियों के मठ बनाए गए और वहाँ सेना भी रही जिससे बौद्ध वापिस न आ सकें।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि भारत, जिससे वह धर्म उत्पन्न हुआ और एक समय ऐसा भी आया जबकि सारा भारत बौद्ध था परन्तु अब उस भारत में उस मत का व्यक्ति भी दृष्टिगोचर नहीं होता। भारत के चारों ओर लंका, ब्रह्मा, चीन, जापान, रूस, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान आदि में करोडों बौद्ध हैं। जैनी अब भी भारत में बहुत न्यून अर्थात् ६-७ लाख हैं। यह लोग छिप छिप कर कहीं गुप्तरूप से रह गए। महात्मा शंकराचार्य जी ३२ वर्ष की अवस्था में परलोक सिधार गए। अन्यथा देखते कि वही ऋषि मुनियों का युग पुनः लौट आता।शंकराचार्य की ओर से जन्म के जैनियों और बौद्धों के लिये केवल यही प्रायश्चित था कि एक दो दिन व्रत रखवा कर उन्हें यज्ञोपवीत पहनाया जाए और गायत्री मन्त्र बताया जाए। परिणामस्वरूप २५ करोड़ मनुष्य प्रायश्चित कर, गायत्री पढ़, यज्ञोपवीत पहन वर्णाश्रम धर्म में आ गये। जब कि चार पांच सौ वर्षों तक वह बौद्ध और जैन रहे थे। बौद्ध लोग वर्णाश्रम को नहीं मानते। खाना पीना भी उनका वेद विरुद्ध है। वह सब प्रकार का माँस खा लेते हैं। चीन के इतिहास और ब्रह्मा के वृत्तान्त से यह बात सब लोग ज्ञात कर सकते हैं। १२०० वर्ष हुए कि यहां पर मुसलमानों ने सूरत और अफगानिस्तान की ओर से चढ़ाई की। आर्यावर्तूत में वैदिक धर्म छूट जाने और पुराणों के प्रचार के कारण सैकड़ों मत थे। इन वेद विरुद्ध मतों के कारण घर घर में फूट हो रही थी। धर्म के न रहने और वाममार्ग के फैलने से व्याभिचार भी बहुत फैला हुआ था। व्याभिचार प्रसार तथा अल्पायु के विवाहों के कारण बल, शक्ति, ब्रह्मचर्य और उत्साह का नाश हो रहा था। ऐसी अवस्था में एक जंगली जाति का हमारे देश पर विजयी होना कौन सा कठिन कार्य था ? हमारी निर्बलता का एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि सोमनाथ के युद्ध में महमूद के साथ १०-१५ हजार सेना थी और हिन्दु राजाओं के पास १०-१५ लाख सेना थी। परन्तु हिन्दु ही पराजित हुए और महमूद विजयी हुआ। आप जानते हैं कि सौ हजार का एक लाख होता है। मानो एक अफगान के सम्मुख सौ हिन्दु थे। ऐसे अवसर पर पराजित होने का कारण ब्रह्मचर्य की हानि और धर्माभाव ही था और कारण इसके अतिरिक्त न था।आप ध्यान से विचार कर ले। तारीखे हिन्द में लिखा है कि इस देश में सर्वप्रथम बापा (राजा चित्तौड़) एक मुसलमानी पर आसक्त होकर मुसलमान हो गया। परन्तु लज्जा से खुरासान चला गया और वहाँ ही मर गया। उसके पीछे उसका हिन्दु बेटा राजगद्दी पर बैठा।

दूसरा इस देश में सुखपाल (राजा लाहौर) धन और राज्य के लोभ से महमूद के समय में मुसलमान हो गया। जिस पर महमूद उसको राजा बना कर चला गया। महमूद के जाने के पश्चात वह पुनः हिन्दु हो गया और ब्राह्मणों ने उसे मिला लिया।

कश्मीर एक बादशाह के अत्याचार से बलपूर्वक मुसलमान किया गया था। अभी तक उनकी उपजातियां भट्ट कौल आदि हैं।

ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन सब में से जो-जो मुसलमान हुए, प्रायः बल प्रयोग से हुए। कोई भी प्रसन्नता, आनन्द अथवा इसलाम को पसन्द करके मुसलमान नहीं हुआ।

बहुत से लोग जागीर आदि के लोभ से मुसलमान हुए जिनकी वंशावलियां स्पष्ट बताती हैं कि पिता पितामह अथवा दो तीन पीढ़ी से ऊपर वे हिन्दु थे।

बहुत से हिन्दु युवक मुसलमानी वैश्याओं के प्रेमपाश में बन्दी हो कर विधर्मी हुए। जो अपने प्रेमियों को इसी दीन की शिक्षा दिया करती हैं। जिनके पहले और अब भी सहस्त्रों उदाहरण प्रत्येक प्रान्त और भाग में मिलते हैं।

बड़े-बड़े योग्य पण्डित भी वेश्याओं के अन्धकूप में डूब गये। उदाहरणार्थ गंगा लहरी के रचयिता जगन्नाथ शास्त्री हैं।

लाखों सूरमा वीर हृदय वाले महात्मा जान पर खेल कर धर्म पर बलि दे गये। शीश दिये किन्तु धर्म नहीं छोड़ा। दाहरणार्थ देखो शहीदगंज और टाड राजस्थान।

आप जानते हैं जब मुसलमान

-पं. लेखराम जी आर्य पथिक

नहीं आए थे। तो उनकी जियारतें, कबरें, मकबरे, खानकाहें और गोरिस्तान भी इस देश में न थे जब ८-९ सौ वर्ष से मुसलमान आए तब से ही भारत में कबरपरस्ती शुरू हुई। अत्याचारी मुसलमान हिन्दु वीरों के हाथ से मारे गए। मुसलमानों ने उनको शहीद बना दिया और हिन्दुओं को जहन्नुम (नारकीय) शोक। शत सहस्त्र शोक।

हमारे पिता पितामहों की रक्तवाहिनी असिधारा ने जिन अत्याचारियों का वध किया, हमारे पूर्वजों के हाथों से जो लोग मर कर दोजख (नरकाग्नि) में पहुँचाए गए। हम अयोग्य सन्तान और कपूत पुत्र उन्हें शहीद समझ कर उन पर धूपदीप जलाते हैं। इस मूर्खता पर शोकातिशोक! अपमान की कोई सीमा नहीं रही। परमेश्वर ! यह दुर्गति कब तक रहेगी ?

ऐ हिन्दु भाइयो ! सारे भारत में जहां पक्के और ऊँचे कबरिस्तान देखते हो, वह लोग तुम्हारे ही पूर्वजों के हाथों से वध किये गये थे। उनके पूजने से तुम्हारी भलाई कभी और किसी प्रकार सम्भव नहीं। अच्छी प्रकार सोच लो।

अगर पीरे मुर्दा बकारे आमदे।
जि शाहीन मुर्दा शिकार आमदे।।

यदि मरा हुआ पीर काम आ सकता तो मृत बाज भी शिकार कर सकते। मुसलमानों ने मन्दिर तोड़े, बुत तोड़े। लाखों का वध किया। इस कठोर आघात के कारण लोग मुसलमान हुए। देखो तैमूर का रोजनामचा (डायरी)

परन्तु भारत ऐसा दुर्भाग्यशाली न था कि ईरान, रोम, मिश्र और अरब की भाँति कभी न जागता। जबकि जगाने वाले उसे जगाते रहे।

मुसलमानों के अत्याचार से ही सती प्रथा प्रचलित हुई ताकि ऐसा न हो कि वे निर्दयी देवियों को पकड़ कर खराब करें। रानी पद्मममनी का सती होना और अलाउद्दीन का अत्याचार। इस घटना से सम्बन्धित इतिहास ध्यान से पढ़ो।

पहला प्रायश्चित- सबसे प्रथम आर्यावर्त में शंकराचार्य जी ने २५ करोड़ बौद्धों का प्रायश्चित करा उनको वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया।

दूसरा प्रायश्चित- महाराजा चन्द्रगुप्त ने किया अर्थात सल्यूकस-बावल के अधिपति (युनान के राजा) की पुत्री से विवाह किया जिसको आज दो सहस्त्र एक सौ वर्ष हुए।

तीसरा प्रायश्चित- राना उदयपुर ने किया जिसने ईरान के राजा नौशेरवां पारसी की कन्या से, जो कि कुस्तुन्तुनिया के राजा सारस की दोहती (दुहित्री) थी, उस से विवाह किया जिसे १३ सौ वर्ष हुए हैं।

चौथा प्रायश्चित- लाहौर के पण्डितों ने राजा सुखपाल का कराया जिसको आठ सौ वर्ष हुए हैं।

पाँचवां प्रायश्चित- मरदाना मुसलमान का बाबा नानक जी ने कराया जिस को चार पाँच सौ वर्ष हुए और उस के शव को खुर्जा में अग्नि में जलाया।

छठा प्रायश्चित- पण्डित बीरबल और राजा टोडरमल ने अकबर बादशाह का कराया, और उसका नाम महाबलि रखा। गायत्री सिखाई, पढ़ाई, यज्ञोपवीत पहनाया और हिन्दु बनाया। गोवध निषेध और मांसाहार से घृणा हो गई। उसने दाड़ी के साथ इसलाम को सलाम कर दिया। फुट नोट : वर्तमान इतिहासकारों ने अकबर का हिन्दु होना कहीं नहीं माना- अनुवादक,आज्ञा दी कि जो हिन्दू भूल से, अज्ञान से, प्रेमपाश में बन्ध कर अथवा लोभ से मुसलमान हो गया हो। यदि वह अपने हिन्दु धर्म में आना चाहता हो तो वह स्वतन्त्र है। उसे मत रोको। यदि कोई हिन्दु स्त्री किसी मुसलमान के फन्दे में मुसलमान होना चाहे तो उसे कदापि मुसलमानी न बनने दिया जाए। प्रत्युत सम्बन्धियों को सौंपी जाए। विस्तार से देखो। (दबिस्ताने मजाहिब पृ.३३४, ३३८ शिक्षादश नवल किशोर)

सातवाँ प्रायश्चित- गुरु गोविन्द सिंह जी ने कराया। अत्याचारी औरंगजेब के समय में उन्होंने समस्त मजहबियों को सिंह बना कर वैदिक धर्म में सम्मिलित किया। इस के अतिरिक्त उन के दो सिख एक बार मुसलमानों नें पकड़ कर बलात् मुसलमान कर दिये थे। जब समय पाकर वह उन के पास आए तो उन को पुनः हिन्दु बना लिया। सिंह बनाया और धर्म में मिलाया।

आठवाँ प्रायश्चित-प्रतापमल ज्ञानी ने कराया। यह कार्य भी औरंगजेब बादशाह के समय में हुआ। जबकि एक हिन्दु लड़का मुसलमान हो गया था। उस को शुद्ध कर के वैदिक धर्म में मिलाया।(देखो दबिस्तान मजाहिब शिक्षा १० पृ.२३९ सनू १२९६ हिजरी नवल किशोर)

नवाँ प्रायश्चित-महाराजा रणजीत सिंह ने कराया। अपने और अपने कई सरदारों के लिए मुसलमानों की लड़कियां लीऔर उनको हिन्दु बनाया।

दसवाँ प्रायश्चित-महाराजा रणवीर सिंह जम्मू कश्मीर ने किया

क्रमशः.....७ पर

महाकुम्भ एक विहंगम् दृष्टि में

-गजेंद्र सिंह आर्य

वेद अपौरुषेय हैं और ईश्वर कृत हैं। सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा की महती कृपा से अमैथुनी सृष्टि के परम ब्रह्मर्षि अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा के हृदय में वेदों का प्रकाश किया। सृष्टि के प्रथम ऋषियों में ब्रह्मा आदि अनेक ऋषि-ऋषिकाओं के पुण्य प्रतापी आत्माओं के हृदय को प्रकाशित कर आलोकित किया। यही वैदिक स्वस्थ परम्परा १,९६,०८,५३,१२५ वर्ष से अनवरत, अविरल ज्ञानगंगा वैदिक धर्म से सनातन प्रवाहित हो रही हैं। इसी सनातन परम्परा को हमारे ऋषि, महर्षि और दिव्य महान पुरुष सम्पूर्ण भूमण्डल पर प्रचारित और प्रसारित करते रहे हैं। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार हमारे कुछ पर्व विशिष्टता रखकर, पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर दृष्टिगोचर होते हैं। जिनमें मधु (चैत्र) शुक्ल प्रतिपदा संवत् पर्व, नभस (श्रावण) पूर्णिमा श्रावणी पर्व, ईष (आश्विन) शुक्ल विजयदशमी विजय पर्व और शारदीय नवसस्येष्टि पर्व दीपोत्सव प्रकाश पर्व (ऊर्ज) कार्तिक मास अमावस्या में, साथ ही वासन्ति नवसस्येष्टि पर्व होलिकोत्सव तपस्य (फाल्गुन पूर्णिमा) हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता हैं। साथ ही माघ मकर संक्रांति पर्व सूर्य का पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव की ओर अग्रसर होने का नाम, वेद शास्त्र और सूर्य सिद्धान्त के अनुसार खगोलीय वैश्विक घटना के कारण उत्तरायण पर्व मकर संक्रांति पर्व के रूप में जाना जाता है। जैसे अबकी बार सूर्य २१ दिसंबर २०२४ को ठीक दिन के दो बजकर चौवन मिनट पर सूर्य पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव की ओर उन्मुख हुआ अर्थात् पृथ्वी की अपनी गति अनुसार पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर बढ़ा। इसी में भारत की भूमि पर माघ (मकर) संक्रांति का प्रथम सूर्योदयन २२ दिसम्बर २०२४ में हुआ। इसी दिन अनेक वैदिक सिद्धान्त के पुजारियों ने उत्तरायण पर्व का स्वागत मकर संक्रांति के रूप में मनाया।

भारत में मोदी सरकार की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के स्थायी प्रतिनिधि पर्वत नैनी हरीश ने कहा कि २१ दिसंबर २०२४ का दिन ध्यान दिवस अर्थात् २१ दिसंबर शीतकालीन अयनांत या संक्रांति का दिन है। भारतीय परम्परा के अनुसार इस दिन उत्तरायण शुरू होता है विशेष रूप से आंतरिक चिंतन और ध्यान के लिए वर्ष के एक शुभ समय की शुरुआत इसी दिन से शुरू होती है। विश्व ध्यान दिवस पर प्रस्ताव को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका विश्व के नेतृत्व के प्रति उसकी (भारत) प्रतिबद्धता का प्रमाण है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक सौ तिरानवें देशों ने इसका पुरजोर समर्थन किया। इस प्रस्ताव का समर्थन समस्त राष्ट्रों के साथ बुल्गारिया, बुरुंडी, डोमिनिकन गणराज्य, आइसलैंड, लक्जमवर्ग, मारीशस, बांग्लादेश, मोनाको, मंगोलिया, मोरक्को, पुर्तगाल और स्लोवेनिया आदि अनेक देशों ने ध्यान दिवस को उत्तरायण संक्रांति के रूप में मनाया।

भारत सरकार ने भी ध्यान दिवस को उत्तरायण (प्रकाश पर्व) संक्रांति के रूप में मनाया। भारत सरकार ने अभी लोकाचार विचार को ध्यान में रखकर स्पष्ट रूप से मकर संक्रांति पर्व भले ही न कहा हो क्योंकि सरकारें समाज और लोकाचार को ध्यान में रखकर काम करती है, कहीं उनका वोट बैंक न खिसक जाए। यही कारण है कि १४ जनवरी २०२५ को प्रथम अमृत महोत्सव का स्नान महाकुम्भ पर प्रारंभ हुआ। यद्यपि दूरस्थ स्थानों से आने वाले भक्तगण तो २१ दिसंबर २०२४ से इस आस्था की डुबकी में अनवरत स्नान करते जा रहे हैं।

कुम्भ हमारा शास्त्रोक्त वैदिक पर्व नहीं है अपितु यह हजारों वर्षों से चली आ रही एक स्वस्थ वैदिक सत्य सनातन परम्परा है। समुद्र मंथन की बात कहकर बार बार दोहरान् करने से यह पर्व अवैज्ञानिकता को जन्म देता है। समुद्र मंथन आदिकाल से आवश्यकता और विकास के आधार पर सदा-सदा से होता रहा है, और आज भी सभी राष्ट्र अपने-अपने सीमांकन से समुद्र मंथन और दोहन कर अपने राष्ट्र का विकास कर रहे हैं। सीता की खोज में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र ने भी वानर, निषाद, किरात आदि अनेकानेक प्रबुद्ध विद्वानों, बुद्धिमानों, वैज्ञानिकों एवं विश्वकर्माओं के माध्यम से रामेश्वरम् स्थान (पहले यह नाम नहीं था) पर एक यज्ञ के माध्यम से अनुष्ठान कर सभी के विचारों से अभिभूत होकर सुग्रीव की सेना के विश्वकर्मा (अभियन्ता), नल-नील के माध्यम से एक राम सेतु का वैज्ञानिक विधि से समुद्र मंथन कर सेतु का निर्माण किया गया और लंका पर चढ़ाई कर माता सीता को मुक्त कराया। यही समुद्र मंथन है पौराणिक आस्थाओ से जिस प्रकार माननीय शंकराचार्यों और धर्माचार्यों तथा जगद्गुरुओं के द्वारा आज समाज को दिग्भ्रमित किया जाता रहा है वह समीचीन नहीं हैं। हमें यह बताना चाहिए कि १४ रत्न जो निकले, वो १४ प्रकार की विद्यायें थी। विद्या सब विधाओं की जननी है। विद्या से बड़ा कोई रत्न नहीं हैं। महाप्रलय के उपरांत सृष्टि के उद्भव के समय समुद्र का जल त्रिविष्टम (तिब्बत) से हटा तो परमपिता परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा के माध्यम से ब्रह्मादि अनेक ऋषियों को १४ विद्याओं के साथ वेद के रूप में वह सब कुछ दिया कि उससे समय-समय पर अब भी समुद्र मंथन हो रहे हैं।

आज जिस महाकुम्भ का मेला चल रहा है, यह भी एक वैदिक सत्य सनातन परम्परा का ही चक्र हैं। किसी समय वैदिक काल से हमारे यहाँ ऋषि, महर्षि, मुनि और महान पुरुष जंगलों और वनों, पहाड़ों पर बैठकर जो तप साधना करते थे और स्वाध्याय से अपने सभी मनोविकारों को दूर करके अपने यजमानों (गृहस्थाश्रम) को गाँव-गाँव और नगर-नगर में जाकर अपने उपदेशों से अभिसिंचित कर, उन्हें एक वर्ष के लिए आप्लावित कर, आनंद की अनुभूति कर, राष्ट्र के निर्माण में एक महती भूमिका निभाते थे। ठीक उसी शृंखला में क्रम त्रिवर्षीय, षडवर्षीय व द्वादशवर्षीय की एक सामूहिक प्रवचनों, उपदेशों की परम्परा स्थापित हो गई। बड़े-बड़े ऋषि, महर्षि, मुनि, वानप्रस्थी, शंकराचार्य, धर्माचार्य, जगद्गुरु, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर प्राकृत संसाधनों को ध्यान में रखकर विचारों का सागर मंथन कर समूचे आर्यावर्तृत को चार भागों, दिशाओं में रखकर हरद्वार, प्रयागराज, उज्जैन तथा नासिक स्थानों का वैचारिक क्रांति हितार्थ चयन किया गया। हरद्वार (भागीरथ गंगा), प्रयागराज त्रिवेणी (गंगा यमुना सरस्वती), उज्जैन (शिप्रानदी) और नासिक (गोदावरी नदी) पर स्थित है। इन्हीं स्थानों पर विद्वानों के सारगर्भित उपदेशों से सत्य सनातन वैदिक धर्म की अविरल पवित्र ज्ञान गंगा समूची वैदिक संस्कृति को समाहित करने और विश्वपटल पर विश्ववारा संस्कृति को आच्छादित हितार्थ करती रही है, वसुधैव कुटुम्बकम् का उद्घोष करती रही है अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम का निनाद करते हुए संदेश देती थी कि सारे विश्व के लोगों, सर्वश्रेष्ठ बन जाओ। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का यही अंतिम मूलमंत्र है। हम हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, सिक्ख, बौद्ध, जैन, चार्वाक, यहूदी या वाममार्गी आदि न बनें अपितु मनुर्भवः, मनुष्य बनें और अपनी संतति को दिव्य गुणों से अमृत प्रदान करें। अतः आज जो महाकुम्भ चल रहा है यदि यह ध्यान दिवस उत्तरायण पर्व से प्रारंभ होता तो ज्योतिष जो वेद का परम चक्षु है, गणित ज्योतिष के अनुसार और लोकाचार के १२ फरवरी को पूर्णिमा को अंतिम हो जाता है, फिर भी कुम्भ का मुख्य ध्येय धर्म संस्कृति और संस्कारों से जनमानस को जागृत करना चाहिए, केवल गंगा के संगम, प्रयागराज तीर्थ पर स्नान करने से मोक्ष मिल जायेगा एवं सारे पाप धुल जाएंगे और पुण्य प्राप्त होगा ऐसा कदापि नहीं होगा। १४४ वर्षों का संयोग बताकर वैदिक सिद्धान्त का अवमूल्यन किया जा रहा है। ज्ञानी जन बताते हैं फलोपभोग के बिना कर्म का क्षय नहीं होता।

न भुक्तं क्षीयते कर्मकल्प कोटि
शतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म
शुभाशुभम्।।

बिना भोग के कर्मों का क्षय नहीं होता करोड़ों वर्ष बीत जाने पर भी बिना भोगे कर्म नष्ट नहीं होते। मनुष्य को शुभ और अशुभ कर्म अवश्य भोगने पड़ते हैं।

यथाकारी यथाचारी तथा भवति,
साधुकारी साधुर्भवति।
पापकारी पापो भवति, पुण्यः
पुण्येन कर्मणा भक्ति पापः
पापेन।।

मनुष्य का जैसा कर्म होता है वैसा ही उसका आचरण होता है। वैसा ही बन जाता है, भला करने वाला भला बन जाता है । पुण्य कर्म से पवित्र और पाप कर्म से पापी बन जाता है।

Man is where his mind is, Mind determines what man is-

जैसा सोचोगे वैसा हो जाओगे, इसलिए वैसा सोचो जैसा होना है।

केंद्र सरकार के सानिध्य से राज्य सरकार की व्यवस्थाएं अत्युत्तम हैं जिससे किसी भी पर्यटक भक्त की आस्था के साथ कोई खिलवाड़ न करें। देश, विदेशों के राजनैयिक और गणमान्य महानुभाव भी इस सनातन परम्परा का आनंद सानन्द उठाते देखे गए। कुछेक अप्रिय घटनाएं जो बड़ी मर्मांतक और हृदय विदारक घटी है उनका तो महाकुम्भ ने संसार ही उजाड़ दिया परंतु इसमें कुम्भ का दोष नहीं है । कुछ सिरफिरे, असामाजिक तत्वों की साजिश ने तुच्छ राजनीति के कारण बहुतों के घर में अँधेरा कर दिया। लेखक उनकी दिवंगतात्मा हितार्थ शांति की कामना करता है ।

कुम्भ के ही एक धर्माचार्य, धर्मगुरू कालीचरण जी संत यह उपदेश करते देखे गए की जो दिवंगत आत्मा प्रयागराज तीर्थ में मृत्यु को प्राप्त हो गई हैं उन सभी को मोक्ष मिलेगा। ऐसा दर्दनाक कथन उन परिवारों के प्रति जले पर नमक और नीबू डालना है। ऐसे धर्मगुरूओं को अपने अखाड़ों से निकाल देना चाहिए।

सारांश यह है कि समस्त माननीय शंकराचार्यों, धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों, जगद्गुरुओं को इस शुभ वेला पर कुछ निर्णय कठोरता के साथ लेने चाहिए, जैसे किसी भी समाज का वेदों का विद्वान सदाचारी व्यक्ति (स्त्री पुरुष) भी शंकराचार्य, धर्माचार्य, महामंडलेश्वर बन सकता है। सबको यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार दिया जाए। प्रत्येक गुरुकुल में आर्य समाज का गुरुकुल हो या पौराणिक सनातनी, सभी को समान रूप से पाण्डित्य पाने का अधिकार होना चाहिए। हिंदुओं की घटती जनसंख्या पर सभी धर्माचार्य, जगतगुरु ध्यान आकृष्ट करें, साथ ही धर्मांतरण की गतिविधियों पर कोई योजना, माननीय शंकराचार्यों धर्माचार्यों द्वारा बनायी जाए। कमजोर, आकिंचन और दलित वर्ग को सुविधा का प्रलोभन देकर उन्हें इस्लाम और ईसाई मिशनरी उनका धर्मांतरण कर रही हैं। आप समाज के क्षत्रप हैं, समाज आपकी ओर देख रहा है। वेटिकन सिटी में बैठा हुआ पोप और अरब (मक्का मदीना) में बैठा ख़लीफा हजारों हजार मीलों पर बैठे भारत माता का धर्मांतरण कर चीर हरण कर रहे हैं और हमारे सभी धर्माचार्य, शंकराचार्य महाभारत के भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि की तरह मूकदर्शक बने रहे तो वह दिन दूर नहीं, आप भी इस्लाम और ईसाई की गोद में समा जाएंगे। अब तो हमें कृण्वन्तो विश्वमार्यम के घोष को सार्थक करना पड़ेगा।

जिस तरह महर्षि दयानंद ने अपने कालजयी ग्रन्थ में ईसाई, इस्लाम के साथ न्याय कर सत्यासत्य पर पराधीन भारत में दो टूक जो लिखा है, कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश ने जो हिन्दू समाज की धमनियों में रक्त संचारित किया है, उसी से राष्ट्र और समाज जीवंत है। अतः आओ सोचें और विचारें समस्त माननीय आप (शंकराचार्य, धर्माचार्य इत्यादि) हिंदू समाज की नाभि हैं।

विद्या सब धन की नायक है,
विद्या के सब धन पायक हैं।
श्वासों का उद्देश्य कर्म है थक
कर क्यों मर जाएँ ।
मरने से पहले कुछ कर लें, याद
सभी को आएं।।

(वेदिक प्रवक्ता, पूर्व प्राचार्य)
धर्माचार्य जेपी विश्वविद्यालय,
अनूपशहर
बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष-९७८३८६७५११

पृष्ठ.....५ का शेष.....

जब कि तीन राजपूत सिपाही लद्दाख में मुसलमान हो गए थे बड़ी प्रसन्नता पूर्वक तीनों को पुनः हिन्दु धर्म में सम्मिलित किया। जम्मू के विद्वान पण्डितों ने रणवीर प्रकाश एक ग्रन्थ बनाया, जिस की दृष्टि से चालीस पचास वर्ष से मुसलमान हुए लोगों को हिन्दुधर्म में सम्मिलित किया जा सकता है। काशी के पण्डितों ने भी इस से सहमति प्रकट की और व्यवस्था दी। एक बहुत बड़ी पुस्तक प्रत्येक सभा को जम्मु से बिना मूल्य मिल सकती है।

ग्यारहवाँ प्रायश्चित–श्रीमानू स्वामी दयानन्द जी महाराज ने कराया अर्थात काजी मुहम्मद उमर साहिब सहारनपुर निवासी को मुसलमान से आर्य बनाया और वैदिक धर्म पर चलाया।वह अब देहरादून में ठेकेदार है। जिनका नाम अलखधारी है, और वह देहरादून समाज के सदस्य हैं।

बारहवाँ प्रायश्चित–स्वामी जी के परलोक गमन के पश्चात श्रीमती परोपकारिणी सभा ने कराया अर्थात श्री अबदुल अजीज साहिब को जो पंजाब यूनिवर्सिटी की मौलवी कालिज की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं और जो अब गुरदासपुर (पंजाब) में असिस्टैंट कमिश्नर हैं फुट नोट–यह घटना आर्य पथिक की अपने काल की है–अनुवादक, शुद्ध किया और आर्य बनाया जिन का शुभ नाम अब राय बहादुर हरदस राम जी है।

तेरहवाँ प्रायश्चित– सन्त ज्वाला सिंह जी ने कराया जिन्होंने न्यूनातिन्यून चालीस मुसलमानों को वैदिक धर्म में लाकर शुद्ध किया।

चौदहवाँ प्रायश्चित–१४ वर्ष हुए श्री रामजी दास ईसाई ने सात लड़कों को ईसाई बनाया था। कसूर के पण्डितों और महात्मा लोगों ने उनको शुद्ध किया। वे लड़के अच्छे २ पदों पर हैं।

पन्द्रहवाँ प्रायश्चित–आर्य समाज के सदस्यों ने किया अर्थात राजपुताना, पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तादि में न्यूनातिन्यून दो सहस्त्र मुसलमानों, ईसाईयों और जैनियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में लाकर आर्य बनाया। सन्ध्या, गायत्री सिखा कर प्रायश्चित्त कराया। गौ ब्राह्मण का हितैषी बनाया। अन्धकार से निकलवाया। क्योंकि यह संख्या प्रतिदिन उन्नति पर है। अतः ठीक संख्या बताना कठिन है।

प्रिय भाईयो ! इस विनम्र प्रार्थना को पढ़ कर पांच मिनिट तक हृदय में विचार करो कि यदि आप इसी प्रकार बेसुध रहे तो आप की क्या अवस्था होगी।

आठ सौ वर्ष के अन्दर आप २४ करोड़ से न्यून होते होते २० करोड़ रह गए।आप गणित विद्या जानते हैं।अरब अ मुतनासिब को कार्य में लाएं :-

प्रश्न- चार करोड़ हिन्दु आठ सौ वर्षों में मुसलमान हो गए तो २० करोड़ कितने वर्षों में होंगे ?

उत्तर-८०० वर्ष २० करोड़/४ करोड़ = उत्तर ४००० वर्ष में .भाइयो ! अवश्य सम्भलो। आँखें खोल कर देख लो। कुम्भकरण की निद्रा मत सोवो। धर्म नष्ट हो रहा है।

लोग वेद के धर्म को नष्ट कर रहे हैं।लोभ, लालच, धोखे में फंसा कर तुम्हारे बच्चों को म्लेच्छ बना रहे हैं। यदि आप इसी प्रकार सोते रहे।करवट न बदली तो ४००० वर्ष के पश्चात एक भी वैदिक धर्म का अनुयायी न रहेगा .सब म्लेच्छ हो जाएंगे। केवल यही एक नदी आप के धार्मिक भवन को गिराने वाली नहीं है। एक और नदी भी अभी जारी हुआ है। उसका नाम ईसाई धर्म है।

दो सौ वर्ष का समय हुआ कि ईसाई पादरियों ने यहां आकर इंजील सुनानी शुरू की। उस समय इस देश में एक भी ईसाई न था। तुम्हारे बहुत से अकाल पीड़ित लोगों को मद्रास और अन्य भिन्न भागों में इन पादरियों ने लोभ देकर ईसाई बना लिया। सामायिक जन गणना से ज्ञात हुआ कि इस समय इसाई बीस लाख हैं।

क्या कभी आपने सोचा कि इस समय तक कितने ईसाई हो चुके हैं ? भाईयो ! परमेश्वर के लिये आँखें खोलो। नींद से जागो। मुख प्रक्षालन करके स्नान करो। अपनी अवस्था सम्भालो। तुम्हारे धर्मरूपी पेड़ को दोनों ओर से दीमक लग रही है। अपने आप को बचा लो। अन्यथा तुम्हारा ठिकाना न मिलेगा। चिह्न तक न रहेगा।

मद्रास आज कल सौभाग्यशाली है। जहां सैंकड़ों घरों ने, जो अकाल के कारण ईसाई हो गये थे, ईसाई धर्म छोड़ दिया है। ब्राह्मणों ने न सहस्त्र व्यक्तियों को वैदिक धर्म में मिला लिया है। ईसाई रो रहे हैं। कुछ बस नहीं चलता। तुम्हें भी चाहिए। दया करो। कृपा करो। अपने भोले भाले बेसमझ बच्चों का जीवन व्यर्थ न गंवाओ। जो शरण आये उसे ठीक कर लो। प्रायश्चित करा के शास्त्रोक्त रीति से शंकर स्वामी की भाँति, बाबा नानक की भाँति, चाणक्य ऋषि की भाँति, महाराजा रणवीर सिंह की भाँति मिला लो। अन्यथा स्मरण रखो कि मुसलमान और ईसाई रह करके वे जितनी हत्यायें करेंगे, उन सब का पाप तुम्हारे गले पर होगा। परोपकारी बनो। जगत् का भला करो। पिछड़े हुए भाईयों को प्रायश्चित से शुद्ध करके मिलाओ।

(सन्दर्भ ग्रन्थ- कुलयात आर्य मुसाफिर)

ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ के तत्वावधान में ऋषिवर दयानन्द सरस्वमती के जन्म एवं बोध दिवस समारोह का भव्य आयोजन दिनांक २३ फरवरी से २६ फरवरी, २०२५ तक मेरठ के विभिन्न क्षेत्रों एवं आर्य समाज थापर गंज में किया गया है।

कार्यक्रम में दिनांक २३ फरवरी को स्थान कंकरखेड़ा, श्रद्धापुरी, फेस-१, सेक्टर-१ पार्क निकट-विनायक आंखों के अस्पताल के पीछे दिनांक २४ फरवरी को स्थान लाल बहादुर शास्त्री पार्क एच. ब्लाक, पी.वी.एस. माल के सामने, शास्त्री नगर, दिनांक २५ फरवरी स्थान महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, रक्षापुरम् मवाना रोड, दिनांक २६ फरवरी, २०२५ स्थान आर्य समाज थापर नगर, मेरठ में प्रातः कालीन सत्र समय ८:३० से ११:३० तक प्रतिदिन होंगे। रात्रिकालीन सत्र प्रत्येक दिनांक सायं ६:३० से रात्रि ९:०० बजे तकआर्य समाज थापर नगर, मेरठ में होंगे।

समारोह में डॉ. योगेन्द्र याज्ञिक नर्मदापुरम् एवं पंडित भानुप्रताप शास्त्री भजनोपदेशक, बरेली आदि पधार रहे हैं।

सभी धर्म एवं राष्ट्र प्रेमी नर-नारियों से अनुरोध है कि उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर समारोह को सफल बनावें।

सम्पर्क सूत्र-९४५६४८२०७२/९४१२५१२७६५/९३५९८४२६३१

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज स्टेशन रोड, पीलीभीत द्वारा आयोजित ऋषि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव समारोह दिनांक २२ फरवरी से २६ फरवरी, २०२५ को बड़े धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें आचार्य श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी, ज्वालापुर हरिद्वार, श्री वृषपाल विमल जी भजनोपदेशक सिनौली, बागपत पधार रहे हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ७:३० से १०:३० तक यज्ञ भजन व आध्यात्मिक सत्संग तथा सायंकाल ७:०० से ९:०० बजे तक भजन व वैदिक सत्संग होगा।

सभी धर्म जिज्ञासु बन्धु-बान्धवों से निवेदन है कि समारोह में अपनी गरिमामई उपस्थित से सफल करे एवं वैदिक/आध्यात्मिक सत्संग से मनुष्य जीवन के मर्म को समझें व पुण्य अर्जित करें।

सम्पर्क सूत्र-८९५४०८७१६४/९४१२३१३२८६/९४११८८४१९०

स्वामी दयानंद और राजधर्म

स्वामी दयानंद सरस्वती की २०० वीं जयंती पर विशेष रूप से प्रकाशित

-प्रियांशु सेठ

उन्नीसवीं शताब्दी के महान् दार्शनिक चिन्तक स्वामी दयानंद सरस्वती भारतवर्ष में आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता और संप्रभुता का संचार करना चाहते थे। सन् १९४७ से पूर्व का भारत तो पराधीनता की बेड़ियों में बंधा था, लेकिन महाभारत के बाद का भारत तो कुप्रथाओं की कटपुतली बनकर झूम रहा था। स्वामी दयानंदजी ने अपने दूरदर्शी चिन्तन से इन कुप्रथाओं (**Malpractices**) को मनुष्य जाति से मुक्त करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वराज्य, स्वधर्म, स्वभाषा का आंदोलन चलाया और अंधविश्वास (**Superstition**), हीनदेवतावाद (**Pantheism**) या अनेकेश्वरवाद (**Polytheism**), मूर्तिपूजा (**Iconolatry**), छुआछूत (**Untouchhability**), बाल विवाह, सती प्रथा, जातिवाद और वेदों के निरंतर ह्रास आदि का पुरजोर विरोध करते हुए वेदों का सही स्वरूप, वर्ण-व्यवस्था, पुनर्विवाह, स्त्री-शिक्षा, शूद्राधिकार, अग्निहोत्र, एकेश्वरवाद, गौरक्षा, कृषि इत्यादि का शंखनाद किया। इसी क्रम में स्वामीजी ने अपना चिंतन राजधर्म पर भी प्रकट किया-

(त्रीणि राजाना) तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए , एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये हैं- प्रथम राज्यप्रबन्ध के लिए एक 'आर्यराजसभा' कि जिस से विशेष करके सब राज्यकार्य्य ही सिद्ध किये जावें। दूसरी 'आर्यविद्यासभा' कि जिस से सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जाय। तीसरी 'आर्यधर्मसभा' कि जिस से धर्म का प्रचार और अधर्म की हानि होती रहे। इन तीन सभाओं से (विदथे) अर्थात् युद्ध में (पुरूणि परिविश्वानि भूषथः) सब शत्रुओं को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।

-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, राजप्रजाधर्मविषय।

स्वामीजी राज्य के मुखिया का एकतंत्र (**Autocracy**) या अधिनायक (**Leader**) होने का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि एक व्यक्ति की सीमाएं सीमित होती हैं, सभी राजकार्य वह अकेला सम्पन्न नहीं कर सकता। अतः राज्यकार्य में सहायतार्थ उन्होंने वैदिक-व्यवस्था के अनुसार उक्त तीन समिति/सभा निर्मित करने का प्रावधान किया। ये सभा अपने क्षेत्र से संबद्ध सभी समस्याओं पर यथासमय राजा का मार्गदर्शन करेंगी और विधान का कार्यन्वयन करेंगी जोकि प्रजा के हितार्थ हो, ऐसा स्वामीजी का मंतव्य था। इसके अतिरिक्त स्वामीजी निर्बल या भीरू शासक के कभी पक्षधर नहीं थे। उनकी दृष्टि में शासक शक्तिशाली, बहुश्रुत, निष्पक्ष, विद्वान्, शत्रुहंता, श्रद्धापात्र, गुणी इत्यादि उत्तम विशेषताओं से युक्त हो। अपने ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास में स्वामीजी लिखते हैं-

सब सेना और सेनापतियों के ऊपर राज्याधिकार, दण्ड देने की व्यवस्था के सब कार्यों का आधिपत्य और सब के ऊपर वर्त्तमान सर्वाधीश राज्याधिकार इन चारों अधिकारों में सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में प्रवीण पूर्ण विद्यावाले धर्मात्मा जितेन्द्रिय सुशील जनों को स्थापित करना चाहिये अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश, प्रधान और राजा ये चार सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान् होने चाहियें।

स्वामी दयानंदजी द्वारा राजा (**President**), प्रधान (**Prime Minister**), न्यायाधीश (**Judge**) और सेनापति (**Commander**) हेतु निर्दिष्ट अर्हताओं में सामान्य प्रशासन (**General Administration**), न्याय व्यवस्था (**Judicature**), दण्ड प्रक्रिया (**Penal Process**), सैन्य शक्ति (**Militry Powe**त) आदि स्पष्ट झलकती है। स्वामीजी की राजधर्म विचारधारा प्रजातांत्रिक (**Democratic**) थी लेकिन वे अज्ञानियों के समूह द्वारा लिए गए निर्णय को अग्राह्य ठहराते हैं। वे धर्मानुकूल निर्णय को ग्रहणीय समझते हैं। इसी प्रकार संविधान (**Constitution**) के संबंध में स्वामी दयानंदजी का मंतव्य है कि कोई भी संविधान जो प्रजाहित में बनाए जाएं वे ऐसे दस सदस्यों की संविधान सभा से प्रस्तावित हो जो बुद्धिमान् एवं वेदवित् हो, वे भाषाविद् हो, तार्किक हो, ऋग्, यजुः, सामवेदों के विज्ञ तीन विद्वानों की सम्मति से प्रस्तावित संविधान भी जनता को मान्य होने चाहिएय किंतु उक्त सदस्य, ब्रह्मचारी, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ होने चाहिए। (**Contribution of Arya Samaj in the Making of Modern India By Radhey Shyam Pareek] Pg- 232**)

यहां अवधान के योग्य बात है, स्वामीजी ने बारंबार चारित्रिक शुचिता पर विशेष बल दिया है। उनकी धारणा है कि चरित्रवान् व्यक्ति ही राष्ट्रनिर्माण में सार्थक सहयोग करके अपने राज्य को संपन्न कर सकता है इसीलिए स्वामीजी लिखते हैं- ''यथा राजा तथा प्रजाः'' अर्थात् जैसा राजा है वैसी ही उस की प्रजा होती है। (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

अब हम स्वामीजी के विचार सभापति (**President**) और गुप्तचरों (**CBI/CID/DIA/IB/RAW/NCB/LIU**) के संबंध में क्या होने चाहिए, इसे जानते हैं। वे कहते हैं- ''जो नित्य घूमनेवाला सभापति

क्रमशः.....८ पर

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

आर्य समाज शान्ताक्रुज मुम्बई का ८०वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

आर्य समाज शान्ताक्रुज, मुम्बई पश्चिम का ८०वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक २५ एवं २६ जनवरी, २०२५ को आर्य समाज शान्ताक्रुज के सभागार में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

दिनांक २५ जनवरी को प्रातः यजुर्वेदीय यज्ञ आचार्य हरि शंकर अग्निहोत्री, आगरा, पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री एवं पं. भूपेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। अपरान्ह राष्ट्र एवं धर्म रक्षा सम्मेलन स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश यादव राज्य प्रभारी भारत स्वाभिमान मुम्बई थे। समारोह को डा. सोमदेव शास्त्री, आचार्य संजय सत्यार्थी, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, श्री गौतम खट्टर आदि ने ओजस्वी वाणी में सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य धनंजय शास्त्री, देहरादून एवं आभार प्रकट, श्री दीपक पटेल प्रधान आर्य समाज शान्ताक्रुज ने किया।

दिनांक २६ जनवरी को प्रातः स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। यज्ञ के पश्चात् पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

आचार्य संजय सत्यार्थी जी नेवादा बिहार को आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक पुरस्कार, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी जी बिजनौर उ.प्र. को स्व. नारायण दास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार, श्री ओम प्रकाश फ्रंटियर जी, जमातपुर उ.प्र. को श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध पुरस्कार, आचार्या नर्मदा जी, गुरूकुल चित्तौड़गढ़ को श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार, आचार्य धनन्जय शास्त्री जी, गुरूकुल पौन्धा, देहरादून को पंडित युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार, श्री हरिशंकर अग्निहोत्री जी, आगरा उ.प्र. को श्री मेघजी भाई आर्य सहित्य पुरस्कार श्री गौतम खट्टर जी, देहरादून उत्तराखंड को कैप्टन देवरत्न आर्य संगठन वीर आर्य पुरस्कार, प्रत्येक को २१०००/- राशि, स्मृतिचिन्ह श्रीफल, शाल व मोती माला प्रदान कर सम्मानित किया गया।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी को वेद वेदांग पुरस्कार के रूप में ३१०००/- रूपये, स्मृति चिन्ह, शाल, श्रीफल व मोतीमाला देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा कु. प्रियांशु पवार को स्व. हर भगवान गांधी मेधावी पुरस्कार, कु. भाविका शर्मा दोनों गुरूकुल आम सेना को स्व. नारायण सहगल मेधावी छात्रा पुरस्कार के रूप में प्रत्येक को १५०००/- रूपये राशि भेजी गयी।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दिनेश भाई पटेल जी, सुप्रसिद्ध समाज सेवी व बिल्डर थे। विशिष्ट अतिथि श्री हरीश आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई थे। कार्यक्रम के संयोजक पं. नामदेव शास्त्री तथा संचालन पं. विनोद शास्त्री व भूपेन्द्र शास्त्री ने किया। अन्त में सभी अतिथिगणों का आभार श्री दीपक पटेल, प्रधान व श्री संदीप आर्य मंत्री आर्य समाज शान्ताक्रुज ने प्रकट किया।

पृष्ठ.....७ का शेष.....

हो उसके आधीन सब गुप्तचर अर्थात् दूतों को रक्खे। जो राजपुरुष और प्रजापुरुषों के साथ नित्य सम्बन्ध रखते हों और वे भिन्न-भिन्न जाति के रहैं, उन से सब राज और राजपुरुषों के सब दोष और गुण गुप्तरीति से जाना करे, जिनका अपराध हो उन को दण्ड और जिन का गुण हो उनकी प्रतिष्ठा सदा किया करे।" (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

मंत्रिपरिषद् (**Cabinet Council/Council of Minister**) पर स्वामी दयानंदजी की राय-

स्वामीजी के अनुसार राजा को सात या आठ न्यायप्रिय, वेदशास्त्रज्ञ, कर्मठ, अव्यभिचारित और सम्भ्रान्त सज्जन विद्वानों को मंत्रिपद पर नियुक्त करना चाहिए। इस संदर्भ में वे सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं-

स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों के जानने वाले, शूरवीर, जिन का लक्ष्य अर्थात् विचार निष्फल न हो और कुलीन, अच्छे प्रकार सुपरीक्षित, सात वा आठ उत्तम धार्मिक चतुर 'सचिवान्' अर्थात् मन्त्री करे। (षष्ठ समुल्लास) राजा और प्रजा का संबंध स्वामी दयानंदजी की दृष्टि में-

स्वामीजी के अनुसार राजा और प्रजा परस्पर पिता-पुत्र की भांति व्यवहार करें, एक-दूसरे के सहायक हों। राजा जन सामान्य की समस्याओं का नियमपूर्वक निस्तार करे और प्रजा राष्ट्रहित के नियमों का पालन करते हुए अपने राजा की अवहेलना न करे। वे लिखते हैं- क्योंकि प्रजा के धनाढ्य आरोग्य खान पान आदि से सम्पन्न रहने पर राजा की बड़ी उन्नति होती है। प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने। यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उन का रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किस का? और राजा न हो तो प्रजा किस की कहावे? दोनों अपने-अपने काम में स्वतन्त्र और मिले हुए प्रीतियुक्त काम में परतन्त्र रहैं। प्रजा की साधारण सम्मति के विरुद्ध राजा वा राजपुरुष न हों, राजा की आज्ञा के विरुद्ध राजपुरुष वा प्रजा न चले, यह राजा का राजकीय निज काम अर्थात् जिस को 'पोलिटिकल' कहते हैं संक्षेप से कह दिया। अब जो विशेष देखना चाहै वह चारों वेद, मनुस्मृति, शुक्रनीति, महाभारतादि में देखकर निश्चय करे और जो प्रजा का न्याय करना है वह व्यवहार मनुस्मृति के अष्टम और नवमाध्याय आदि की रीति से करना चाहिये।(सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

इतना ही नहीं, स्वामीजी ने उक्त समुल्लास में अट्ठारह विवादयुक्त कर्मों को बतलाकर उन पर नियम बांधने का भी निर्देश दिया है। वे कर्म हैं- १. (ऋणादान) किसी से ऋण लेने देने का विवाद। २. (निक्षेप) धरावट अर्थात् किसी ने किसी के पास पदार्थ धरा हो और मांगे पर न देना। ३.(अस्वामिविक्रय) दूसरे के पदार्थ को दूसरा बेच लेवे। ४. (सम्भूय च समुत्थानम्) मिल मिला के किसी पर अत्याचार करना। ५. (दत्तस्यानपकर्म च) दिये हुए पदार्थ का न देना। ६. (वेतनस्यैव चादानम्) वेतन अर्थात् किसी की 'नौकरी' में से ले लेना वा कम देना अथवा न देना। ७. (प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा से विरुद्ध वर्तना। ८. (क्रय-विक्रयानुशय) अर्थात् लेन देन में झगड़ा होना। ९. पशु के स्वामी और पालने वाले का झगड़ा। १०. सीमा का विवाद। ११.किसी को कठोर दण्ड देना। १२. कठोर वाणी का बोलना। १३. चोरी डाका मारना। १४. किसी काम को बलात्कार से करना। १५. किसी की स्त्री वा पुरुष का व्यभिचार होना। १६. स्त्री और पुरुष के धर्म में व्यतिक्रम होना। १७. विभाग अर्थात् दायभाग में वाद उठना। १८. द्यूत अर्थात् जड़ पदार्थ और समाह्य अर्थात् चेतन को दाव में धर के जुआ खेलना। ये अठारह प्रकार के परस्पर विरुद्ध व्यवहार के स्थान हैं।

स्वामी दयानंदजी की दूरदर्शिता की झलक भी अन्य किसी समाज सुधारक में नहीं दिखती, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। राष्ट्रहित या राष्ट्रवाद की भावना ने भारतवर्ष को एक ऐसा समाज सुधारक दिया जिसे जानने के बाद हर व्यक्ति दयानंद का दीवाना बन उठता है। यह भी एक नितांत सत्य है कि "**Dayanand was first to proclaim India for Indians**" अर्थात् भारत पर भारतवासियों का स्वत्व रहे, इसकी सर्वप्रथम घोषणा स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही की थी।

शोक समाचार

आर्य समाज खतौली, मुजफ्फर नगर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री हरिश्चन्द्र आर्य का दिनांक १७ फरवरी, २०२५ की रात्रि बीमारी के कारण मृत्यु हो गयी। आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में स्व. हरिश्चन्द्र सदैव अग्रणी रहे। अपनी सन्तानों को भी वैदिक संस्कार देकर श्रेष्ठ बनाया। छोटी पुत्री सुकीर्ति आर्या भी सुपसिद्ध भजनोपदेशिका है। उनकी मृत्यु से आर्य जगत में आई रिक्तता की भरपाई होना असम्भव है। ईश्वरेच्छा वलीयशी हम सभी प्रभु के विधान के आगे नतमस्तक एवं विवश हैं।

● आर्य समाज तिन्दोला जनपद बाराबंकी के मंत्री श्री राम दुलारे वर्मा का ८१ वर्ष की आयु में दिनांक ८ जनवरी, २०२५ हिन्द अस्पताल, तिन्दोला में मृत्यु हो गयी।

स्व. राम दुलारे वर्मा सच्चें ऋषि भक्त व आर्य समाज के स्तम्भ थे। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में वह सदैव अग्रणी रहे। उनके देहान्त से आर्य समाज को अपूणर्नीय क्षति हुई है जिसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है।

स्व. राम दुलारे वर्मा जी की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन ग्राम तिन्दोला, बाराबंकी में दिनांक १० जनवरी, २०२५ को सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य सत्य प्रकाश आर्य, डॉ. राम नरायन आर्य व श्री अमित शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा एवं उनके समस्त सहयोगी गण अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्माओं के अमरत्व एवं शोकाकुल परिजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

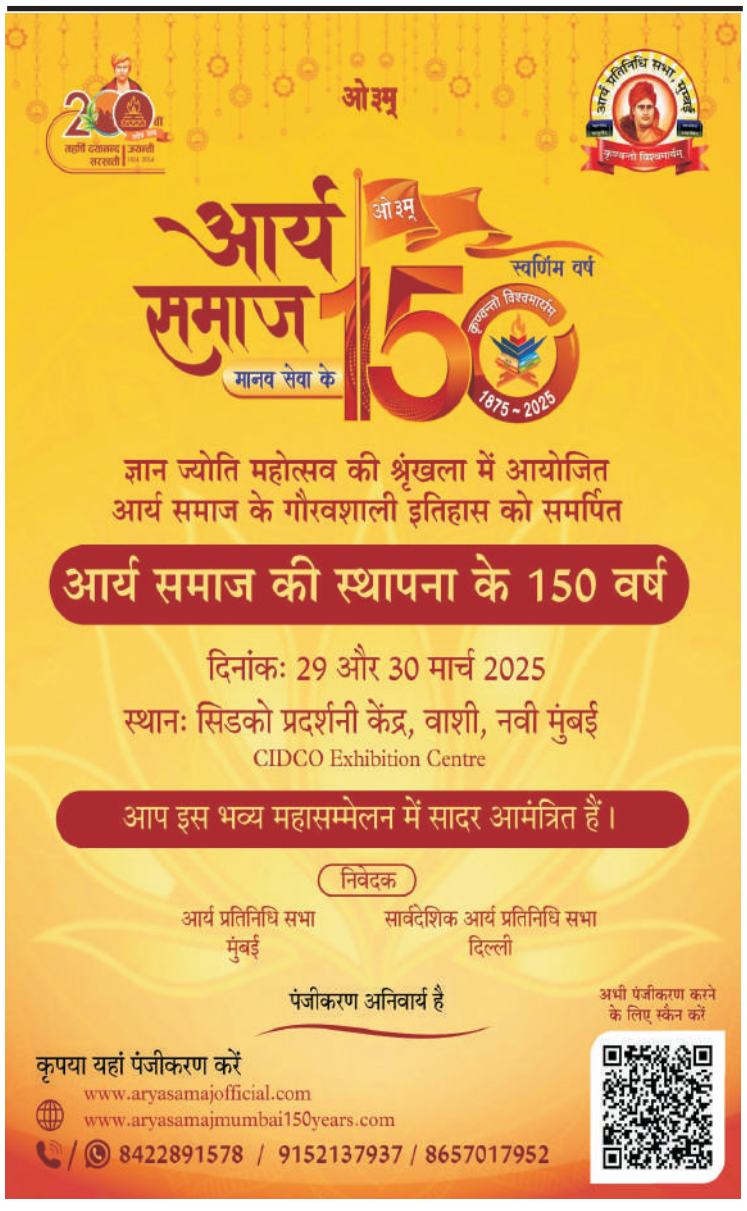

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।